नालको की हिंदी गृह-पत्रिका

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अक्षर

जनवरी-2023

नालको NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड

(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक 'नवरत्न' लोक उद्यम)

निगम एवं पंजीकृत कार्यालय, पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013

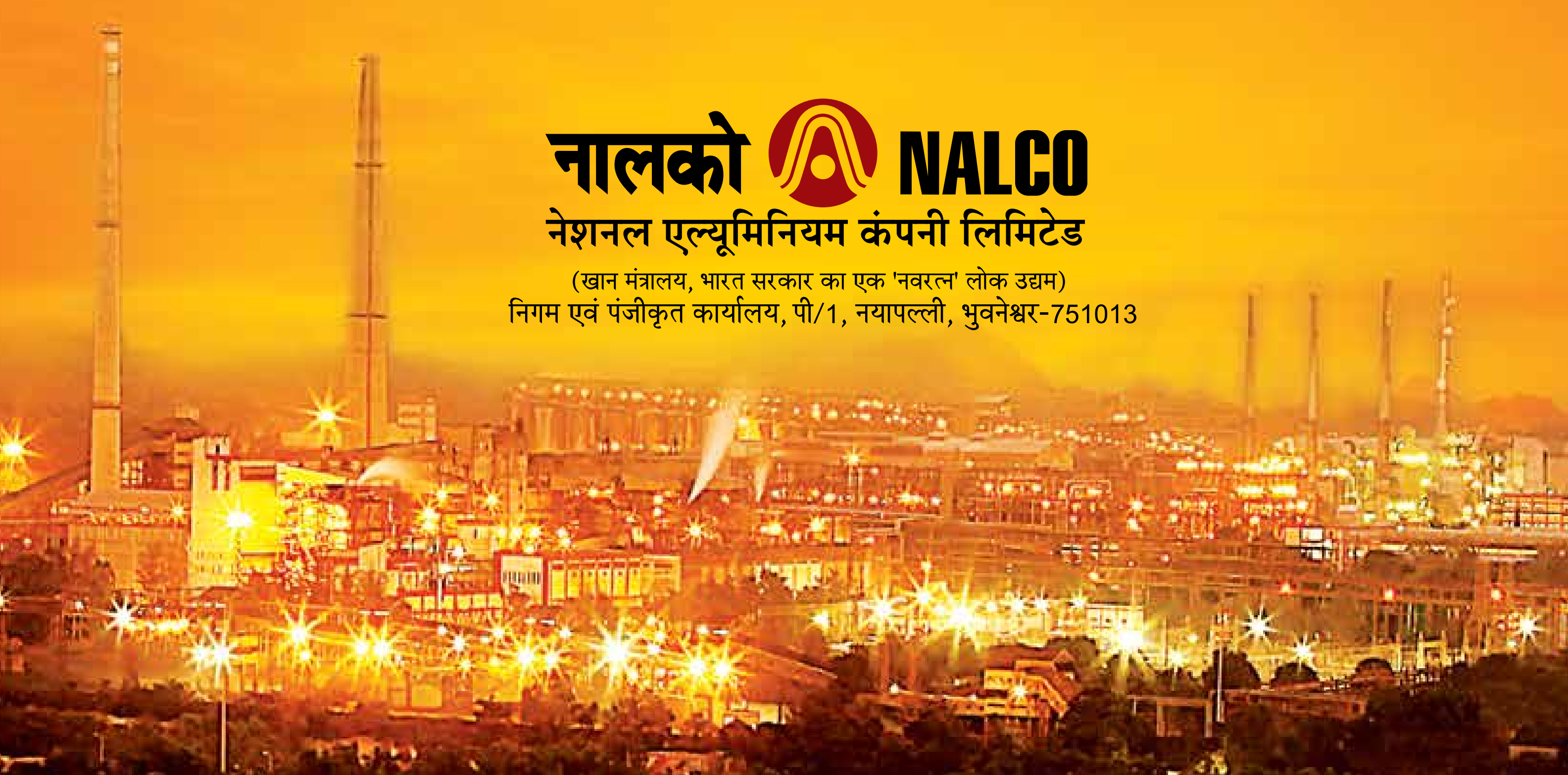

माननीय केंद्रीय संसदीय कार्य, कोयला एवं खान मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी तथा सचिव, खान मंत्रालय एवं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको श्री श्रीधर पात्र दीप प्रज्वलन करते हुए

माननीय केंद्रीय संसदीय कार्य, कोयला एवं खान मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी निगम कार्यालय, नालको के दौरे के दौरान पौधा रोपण करते हुए

41वें वार्षिक साधारण बैठक के दौरान मंचासीन श्री श्रीधरपात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको तथा अन्य निदेशक गण

अक्षर

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका

जनवरी-**2023**

मुख्य संरक्षक

श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री राधाश्याम महापात्र, निदेशक (मानव संसाधन)
श्री एम. पी. मिश्र, निदेशक (परियोजना एवं तकनीकी)
श्री बी. के. दास, निदेशक (उत्पादन)
श्री रमेश चंद्र जोशी, निदेशक (वित्त)
श्री सदाशिव सामन्तराय, निदेशक (वाणिज्यिक)
श्री सोमनाथ हंसदा, मुख्य सतर्कता अधिकारी

सलाहकार

श्री ललाटेन्दू दास, महाप्रबंधक (औद्योगिक अभियांत्रिकी)

संपादक

श्री हिमांशु राय, उप प्रबंधक (राजभाषा), निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

सह-संपादक

श्री रोशन पाण्डेय, उप प्रबंधक (राजभाषा), दामनजोड़ी
डॉ. धीरज कुमार मिश्र, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), दामनजोड़ी
श्री पवन कुमार त्रिपाठी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), अनुगुळ

नालको NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड

(खान मंत्रलाय, भारत सरकार का एक 'नवरत्न' लोक उद्यम)
निगम एवं पंजीकृत कर्यालय
पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013
वेबसाईट: https://www.nalcoindia.com
ईमेल: himanshu.rai@nalcoindia.co.in

सीमित वितरण हेतु

पत्रिका में छपने वाले विचार लेखक/कवि के निजी हैं, इनसे संस्था या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

विषय-सूची

नालको के परिप्रेक्ष्य में केंद्रीय मरम्मत प्रयोशाला : एक परिचय	बी. सुजया लक्ष्मी	09
अब सब कुछ भूल जाओ	अश्विनी सूतार	11
हिन्दी आजकल एवं रोजगार के अवसर	कुँवर सिंह कोड़ाह	12
संकल्प स्वच्छता की	देबकी साहु	13
राष्ट्र की एकता में भाषाओं का योगदान	क्रिपी सामल	14
भाषाएँ हमारी पहचान	सोनाली लेंका	15
भारत की भाषाई एकता और समानता	शाश्वती दास	16
अपनत्व का अहसास करातीं भारतीय भाषाएँ	नन्दिनी प्रियदर्शनी दास	16
हिन्दी : मूल से संस्कार तक	स्वीटी श्वेतलीना	17
भाषागत साधन से राष्ट्रीय एकीकरण	राज नन्दिनी सेठी	18
भारतीय भाषाएँ : विभिन्नता में एकता	प्रवीण कुमार उपाध्याय	19
देश की एकता में हिंदी और भारतीय भाषाओं का योगदान	चिन्मय कुमार महन्त	23
स्वस्थ विचार	स्वाति सुनीता महापात्र	24
भारतीय भाषाएँ - एकता की धुरी	मिलिंद वानखेड़े	25
सांस्कृतिक धरोहर की परिचायक हैं भारतीय भाषाएँ	रोहन किशन पाटिल	27
डिजिटल युग में साइबर अपराध एक बड़ी चुनौती	मीनाक्षी राउत	29
हिंदी पखवाड़ा - 2022	राजभाषा प्रकोष्ठ	31
वाष्प टर्बाइन:एक परिचय	अखिल कुमार	37
गाँव	डॉ. अशोक कुमार जोशी	38
जनसंपर्क: उत्तरदायित्व और भूमिका	आशुतोष रथ	39
तुम जाओगे पर थोड़ा सा रह जाओगे	रामकृष्ण चौधुरी	41
बहुभाषिकता में एकता	ऐशानी दत्ता	42

प्रल्हाद जोशी
PRALHAD JOSHI
ಪ್ರಲ್ಹಾದ ಜೋಶಿ

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संसदीय कार्य, कोयला एवं खान मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली
MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS,
COAL AND MINES
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI

संदेश

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (नालको) की गृह-पत्रिका 'अक्षर' के माध्यम से नालको परिवार से एक बार फिर जुड़कर मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग और प्रसार में 'अक्षर' जैसी गृह-पत्रिकाओं की अहम भूमिका है। 'अक्षर', नालको के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिजनों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान करती है।

हिंदी हमारे देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। अपनी व्यापकता एवं सरलता के चलते यह देशभर में तेजी से एक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो रही है। अपनी इसी विशेषता के चलते हिंदी हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। हिंदी हमारे भारतवर्ष की गरिमामयी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है। इस वर्ष हम अपने देश की स्वतंत्रता के 75 गौरवपूर्ण साल पूरे कर रहे हैं। इस अवसर पर हम अपने आधिकारिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करके आज़ादी के इस 'अमृत महोत्सव' में अपना योगदान दे सकते हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि 'अक्षर' राजभाषा के विकास में अपना अर्थपूर्ण योगदान भविष्य में देती रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त नालको परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(प्रल्हाद जोशी)

Office : Room No. 15, Parliament House, New Delhi-110001, Tel : 011-23017780, 23017798, 23018729, Fax : 011-23792341

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

प्रिय साथियों,

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिसमें संवेदनशीलता, विवेक, साहस, कौशल आदि सभी गुण विद्यमान हैं। इन्हीं गुणों के कारण मनुष्य अन्य जीवों से भिन्न है और ईश्वर की अनुपम रचना से सुशोभित है। जाहिर है मनुष्य में अद्भुत क्षमता है। मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं। मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं की समीक्षा और चिंतन करे तथा पूरी निष्ठा और ईमानदारी से संस्थान हित में कार्यशील रहे। जिससे उसे अन्य साथियों का भी साथ मिलेगा और वह अपने उद्देश्य में सफल हो पाएगा। इस प्रकार सकारात्मक सोच से सभी प्रेरित होंगे और सभी में इन गुणों का विकास होगा, जिससे समाज प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से उचित दिशा में आगे बढ़ेगा।

इस नव वर्ष एवं 43वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर मैं स्वामी विवेकानन्द के कथन ''उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रूकों नहीं'' हेतु आपसे आह्वान करते हुए कहना चाहूँगा कि आप भी अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए पूरे मनोबल से तथा ईमानदारी पूर्वक प्रयास जारी रखें। हमने पिछले वर्ष भी नए रिकार्ड स्थापित किए हैं। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हम साथ मिलकर ऐसे और भी नए रिकार्ड कायम करने की काबिलियत रखते हैं और निश्चित तौर पर ऐसा करने में सफल भी होंगे। इसके साथ ही मैं अपने सभी साथियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने कर्मक्षेत्र के सभी विषयों की तरह ही राजभाषा हेतु भी प्रयासरत रहते हुए, संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन में अपने सहयोग से संवैधानिक दायित्व की पूर्ति करें।

अच्छे पारस्परिक संबंध, विश्वास, सहयोग एवं संवेदना से ही अच्छे कार्य परिवेश का गठन हो सकता है। 'अक्षर' पत्रिका के इस अंक के साथ आइए यह विश्वास और मजबूत करें कि, हम सभी साथ मिलकर कंपनी, कार्यालय और देश के प्रति अपना सर्वोत्तम योगदान देते हुए एक अच्छा परिवेश बनाए रखने में सक्रिय भूमिका अदा करेंगे। मैं प्रभु जगन्नाथ से यह प्रार्थना करता हूँ कि नव वर्ष 2023 आपके लिए सुख, उत्तरोत्तर उन्नति, उत्तम स्वाथ्य एवं समृद्धि दायक हो।

श्रीधर पात्र

(श्रीधर पात्र)

नालको NALCO

राधाश्याम महापात्र
निदेशक (मा सं)
Radhashyam Mahapatro
Director (H R)

प्रिय साथियों,

साधारण व्यक्तित्व की असाधारण क्षमता के साथ प्रत्येक मानव अपने आप में विशेष होता है। उसकी यह विशेषता ही उसे दूसरे से अलग एवं खास बनाती है। जो हमारे भीतर की असीमित योग्यता से संचालित होती है।

'अक्षर' के कलेवर में प्रकाशित होने वाली रचनाएं, लेखक, कर्मचारी एवं अपने आप में कंपनी की उसी असाधारण क्षमता को आपके सामने प्रस्तुत करती है। संभवतः इसी क्षमता के संचार एवं क्रियाशीलता के साथ वित्तवर्ष 2021-22 में हमने श्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ नया मुकाम हासिल किया है। जो आने वाले समय में हमारी उपलब्धि बनकर हमेशा के लिए याद किया जाएगा। इस उपलब्धि में अपना योगदान करने वाले प्रत्येक कर्मचारी के समग्र प्रयास से ही यह संभव हुआ।

समग्र प्रयास से कार्य अमुमन आसान एवं लक्ष्य सफल हो जाता है। राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में भी भारत सरकार इसी सामूहिक प्रयास को रेखांकित करती है। प्रत्येक कर्मचारी की सहयोगी भावना से कार्यालय एवं कंपनी स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बेहतर से बेहतरीन का सफल प्रयास किया जा रहा है। यह प्रशंसा की बात है।

राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हम सभी एक धारणा एवं एक विचार के साथ वैसे ही जुड़ते हैं , जैसे भारतीय भाषाएं हमें एक-दूसरे के साथ जोड़ती हैं। देश की एकता, देश की अखंडता और देश-वासियों की एक पहचान कायम करती हैं। अक्षर का वर्तमान अंक भी इसी समझ, इसी सोच से प्रेरित भी है और पोषित भी। आइए, एक साथ मिलकर भारत की विभिन्नता में समानता, अनेकता में एकता को मजबूत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। कार्यालय, समाज और देश में अपना श्रेष्ठ योगदान देकर अपनी भूमिका पूरी करें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना योगदान देने वाले प्रत्येक के अभिवादन के साथ, आने वाले पल की हार्दिक शुभकामनाओं सहित.....

(राधाश्याम महापात्र)

नेशनल एल्यूमिनियम कम्पनी लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
निगम कार्यालय
नालको भवन, पी-1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751 013, भारत

National Aluminium Company Limited
(A Government of India Enterprise)
CORPORATE OFFICE
NALCO BHAVAN, P/1, Nayapalli, Bhubaneswar - 751013, India

फोन Phone : 0674-2300430 (Off.), फैक्स FAX : 0674-2301751, ई-मेल Mail : dirhr@nalcoindia.co.in, radhashyam.mahapatro@nalcoindia.co.in
CIN : L27203OR1981GOI000920

संपादकीय

यह संक्रमण काल है। समय की विभीषिका जहां मुँह बाए खड़ी है वहीं हमारे समक्ष स्वयं को जोड़कर न सिर्फ जीने की चुनौती है बल्कि अपनी आकांक्षाओं और सपनों को एक उड़ान भी देनी है--

बीते दो बरस ने समूची मानव जाति को बदल कर रख दिया है। हमारी सोच बदल गई है। हमारे जीवन जीने के तौर तरीके बदल गए हैं। हमारे आदर्श, सिध्दांत बदले हैं। हम बदल गए हैं। समाज, देश और पूरी दुनिया बदल गई है। और जो नहीं बदला है वह है मनुष्यता और अपने जीवन का मोल। जी हाँ। हम इस समय को एक मूल्यांकन के क्रम में एक सीख के रूप में देखें, तो शायद समय इससे बड़ी सीख और नहीं दे सकता, प्रतीत होगा। युगों युगों से धर्म प्रवर्तकों, कालजयी कृतियों से जीवन को ही तो केंद्र बिन्दु मानकर उपदेश दिया गया है जिसमें समकालीन नायकों को आदर्श के रूप में स्थापित किया गया है और बार बार नैतिकता का आधार लेकर अधर्म पर धर्म की विजय पताका लहराई गई है। विभिन्न सामाजिक आंदोलन, मत मतांतर यही तो सीख देते आए हैं जो हमने बीते सालों में सीखा है। समय यूँ ही बलवान नहीं कहा जाता। समय समर्थ है अपने होने में। समय किसी को सूत्रधार बनाता है ताकि समय को यश अपयश दोनों ना हो। समय सच है। समय वास्तविक है। समय किसी का नहीं और समय सबका है। समय सिर्फ अपने होने में '' परिवर्तन'' है। वह परिवर्तन जिसमें आज की हर स्थिति कल बदल जाएगी। हमारा कार्य बस इसके साथ चलने का है और यह एक बड़ी चुनौती है। हमारी हर विद्या, हर ज्ञान समय को साधने में ही है। जो जितना कुशल है वह उतना ही समय को साध पाता है और हम उन्हें इस भौतिकवादी संसार में बड़ा मानते हैं और विशिष्ट भी।

समय को साधने में हमारे मूल्य, संस्कार, समाज पीछे छूट रहे हैं। समय को साधने में अक्सर इन मूल्यों का ह्रास हो रहा है। हालांकि भौतिकवादी संसार में 'मैं' की होड़ में जब 'मैं' ही सब कुछ होकर रह जाता है तो यह आशंका सिद्ध तो होनी ही है। समय को साधना तब जोखिम भरा हो जाता है जब 'हम' छूट जाता है और 'मैं' स्थापित हो जाता है। 'हम' के साथ हों तो जोखिम कम होती है पर यह तब न हो जब सोच छिछलेदार ना हो। और यह तब संभव है जब परिवेश में वह संस्कार दिए गए हों ताकि वह मनुष्यता को समझे और जीवन के मोल को भी। स्वयं के साथ दूसरों की भी। तभी वह चिरस्थायी हो पाएगा और इस आपाधापी जीवन में एक मिसाल कायम करने में सफल होगा। समय की विभीषिका में हमने खोया तो बहुत कुछ पर पाने की कोशिश करनी है। अपने सपनों को साकार करने के लिए यह जरूरी है कि हम अपनी संस्कृति की तरफ लौटें। हम एक व्यवस्थित समाज और देश बनाएँ जहाँ जल के स्त्रोत हों। नदी, नाले, तालाब, नहर की समुचित व्यवस्था हो। अवसंरचनात्मक विकास में प्रकृति का दोहन न हो। अपनों से नहीं सबसे प्रेम करें। अपनी पुरातन संस्कृति को समझें तो समय को साधने की नहीं समय साक्षी बनेगा आपके/हमारे होने की।

पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ बड़े ही मनोयोग से लिखी गई हैं जो अर्थपूर्ण और संदेशप्रद हैं। मैं इसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ। नालको के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों, एककों को धन्यवाद जिन्होंने रचनात्मक सहयोग प्रदान किया। नालको के शीर्ष प्रबंधन के समक्ष श्रद्धा से प्रणत हूँ जिनके मार्गदर्शन ने पत्रिका के प्रकाशन हेतु हर सम्भव सुनिश्चित किया। पत्रिका को रचनात्मक दृष्टि से प्रासंगिक व समृद्ध बनाने हेतु पाठकों के सुझाव हमारे लिए मूल्यवान हैं। इस उम्मीद में कि आनेवाला कल आज से बेहतर होगा, आप सभी नालको परिवार के सदस्यों और हित धारकों को नव वर्ष-2023 की अनंत शुभकामनाएँ।

सादर

हिमांशु राय

हिमांशु राय
उप प्रबंधक (राजभाषा)

नालको के परिप्रेक्ष्य में केंद्रीय मरम्मत प्रयोशाला : एक परिचय

आप सभी केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला का नाम सुने ही होंगे। लेकिन आज हम केंद्रीय मरम्मत प्रयोगशाला में होने वाले काम की चर्चा करेंगे। मैं सुजया लक्ष्मी केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला में क्या-क्या काम होता है, उसकी संक्षिप्त जानकारी से अवगत कराती हूँ।

जैसे कि आप सभी जानते है कि केंद्रीय का अर्थ होता है विशेष भाग। मरम्मत का मतलब टुटी-फूटी अथवा बिगड़ी हुई वस्तु को फिर से ठीक करके अच्छी स्थिति में लाने का काम करना और प्रयोगशाला का अर्थ वह स्थान जहाँ पर किसी विषय का विशेषत: वैज्ञानिक प्रयोग या तकनीकी जाँच होती है।

ठीक उसी प्रकार केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला प्रद्रावक इकाई का केन्द्रीय भाग है। यह नियंत्रण और उपकरण विभाग का एक प्रमुख अंग है। यहाँ पर इकाई के सभी क्षेत्र और विभाग के इलक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत की जाती है। अनुसंधान और विकास विभाग (Research & Development Department) के उपकरणों से लेकर, रासायनिक प्रयोगशाला (Chemical Lab) के उपकरणों की मरम्मत एवं रखरखाव का काम केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला में होता है। रासायनिक प्रयोगशाला एल्यूमिनियम के कच्चा माल नमूनों के गुणवत्ता की पहचान करने में अहम भूमिका निभाती है।

इसके अलावा और भी बहुत सारे प्रद्रावक इकाई के विभिन्न स्थल का काम यहाँ पर किया जाता है। जैसे कि

1. प्रदूषण नियंत्रण-विश्लेषक के रखरखाव का काम।
2. बॉयोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली (Biometric attendance system) के रखरखाव का काम।
3. पानी का प्रवाह सूचक यंत्र (फ्लोमीटर) के रखरखाव का काम।
4. परिवेशी वायु गुणवत्ता स्टेशन के (AAQ Station) रख रखाव का काम।
5. टेलीफोन एक्सचेंज के रखरखाव का काम।
6. तुलाचौकी के रखरखाव का काम (Weightment)।
7. बहुत उच्च आवृत्ति सेट (VHF Sets) के रखरखाव का काम।
8. वास्तविक समय में डेटा अधिग्रहण प्रणाली के रखरखाव का काम (RTDAS system)।
9. दूषित एवं गंदे जल उपचार संयत्र के रखरखाव का काम।
10. अस्पताल उपकरणों के मरम्मत एवं रखरखाव का काम आदि।

आइए इनके बारे में जानते हैं।

प्रदूषण नियंत्रण विश्लेषक: (HF & Dust Analyser)

प्रद्रावक इकाई में एल्यूमिनियम के प्रसंस्करण (Processing) के दौरान पॉट लाईन में हाइड्रोजन क्लोराइड़ (HF), धूल (Dust) आदि जहरीली गैस निकलते हैं, जो कि वातावरण के लिए हानिकारक हैं। इसीलिए हाइड्रोजन फ्लोराइड और धूल की शोधन के लिए प्रदूषण विश्लेषक लगाया गया है। जिसमें जहरीली गैस की परिमाण प्रदूषण नियंत्रण समिति द्वारा निर्धारित किये गये सीमा के अंदर है कि नहीं वह तय किया जाए।

प्रद्रावक इकाई में चार पॉट लाईन हैं, जिसमें संपूर्ण आठ नंबर (FTPs) फ्यूम ट्रीटमेन्ट प्लान्ट है। प्रत्येक लाइन में दो नंबर (2 Nos.) फ्यूम ट्रीटमेन्ट प्लान्ट स्थापित किया गया है। हर FTP में हाइड्रोजन फ्लोराइड एवं धूल का विश्लेषक लगाया गया है। वैसे ही कार्बन क्षेत्र में भी दो फ्यूम ट्रीटमेन्ट प्लान्ट है। जिसमें हाइड्रोजन फ्लोराईड एवं धूल का प्रदूषण विश्लेषक लगाया गया है। सभी विश्लषकों की मरम्मत एवं रखरखाव का काम केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला के अंतर्गत आता है, जिसकी डेटा ऑनलाइन प्रदूषण नियंत्रण समिति के निगरानी में है।

बन्द परिपथ टेलीविजन (CCTV):

सी.सी.टी.वी को क्लोज सर्किट टेलीविजन के नाम से जाना जाता है। वहीं कुछ लोग सर्वेलन्स भी कहते हैं। सी.सी.टी.वी सिक्योरिटी कैमरा की मदद से हम चारों तरफ निगरानी रख सकते हैं, साथ ही पिक्चर या वीडियो के रिकॉर्डिंग भी कर सकते हैं। वीडियो को DVR या NVR नेटवर्क वीडियो रेकॉडर पर रिकॉर्डिंग किया जाता है और बाद मे उपयोगकर्ता जब चाहे पुराने वीडियो देख सकते हैं।

प्रद्रावक इकाई के चाहरदीवारी से लेकर मुख्य द्वार, सामग्री द्वार, आवासीय इलाके, सभी विद्यालय में सी.सी.टी.वी. लगाये गये हैं, जिसके रखरखाव का काम केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला करती है।

पानी का प्रवाह सूचक यंत्र (फ्लोमीटर):

आप सभी जल प्रवाह मापन के बारे में सुने ही होंगे। यह एक ऐसा माप यंत्र है, जो किसी नलिका या खुली वाहिका में प्रवाह की दर को मापने के काम आता है।

विशाल औद्योगिक कारखाना, व्यावसायिक एवं आवासीय भवन आदि में बहुत ज्यादा परिमाण में जल आवश्यक होता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए पानी की आपूर्ति प्रणाली का उपयोग होता है। पानी के प्रवाह की मात्रा तय की जाती है, ताकि यह पता चले कि कितने मात्रा की पानी आपूर्ति की जा रही है, या कितना इस्तेमाल हो रहा है। इसके लिए टोट लिज़ाटर लगाया गया हैं। जो कि पानी का संपूर्ण प्रवाह कितना हुआ है को सूचित करता है।

प्रद्रावक इकाई में लगभग बीस (20 Nos.) जल प्रवाह मापी सूचक लगाया गया है। जिसके रखरखाव का काम केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला द्वारा किया जा रहा है।

परिवेशी वायु गुणवत्ता केन्द्र:

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विश्व के लिए चुनौती बन चुकी है। इसीलिए वायु की गुणवत्ता की माप के लिए एयर क्वालिटी इंडेक्स बनाये गये हैं, जो कि वायु की गुणवत्ता को मापते हैं, और वायु में कितने मात्रा में सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, PM 2.5 आदि की मात्रा विश्व स्वास्थ संगठन द्वारा तय किए गए मापदंड से अधिक है या नहीं की सूचना ली जाती है।

प्रद्रावक इकाई में एल्यूमिनियम प्रसंस्करण के दौरान कास्ट हाउस-A, कास्ट हाउस-B एवं रोल्ड उत्पाद इकाई में सलफर ड़ाइऑक्साइड़, नाइट्रोजन ऑक्साइड़ आदि जहरीले गैस निकलते हैं। उन्हीं गैसों की गुणवत्ता की माप के लिए परिवेशी वायु गुणवत्ता स्टेशनों को स्थापित किया गया है एवं इन स्टेशनों के रखरखाव का काम केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला करता है।

दूरभाषा संचार केन्द्र (Telephone Exchange)

संचार के उद्देश्य के लिए जब एक दूरी तक सिग्नल का ट्रांसमिशन किया जाता है तो इसे दूर संचार कहते हैं। संचार के लिए दो चीजों की जरुरत पड़ती है, ट्रांसमीटर और रिसीवर। इसको आसान भाषा में समझें तो दूरसंचार एक ऐसी व्यवस्था है जिसमे हम बहुत दूरी तक जानकारी का आदान-प्रदान कर सक्ते हैं। व्यक्ति द्वारा अपने भावों, विचारों, शब्दों, तथ्यों व संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रत्यक्ष रुप से न भेजकर अप्रत्यक्ष रुप से भेजना ही दूरसंचार है, जो कि आज रोजमर्रा की ज़िंदगी में अहम हिस्सा बन गया है।

प्रद्रावक इकाई में तीन दूरभाष संचार केन्द्र स्थापित किया गया है। एक प्लान्ट के लिए एवं और दो नालको आवासीय परिसर में स्थापन किया गया है, जिसके मरम्मत अथवा रखरखाव का काम केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला करता है।

तुलाचौकी (Weighbridge): (ट्रक तोलने का काँटा)

तुलाचौकी प्रद्रावक इकाई में अहम भूमिका निभाती है। इसे ट्रक तोलने का काँटा भी कहते हैं। प्रद्रावक इकाई में लगभग तीस तुलाचौकी स्थापित किया गया है। प्रद्रावक इकाई में जितने भी एल्यूमिनियम का कच्चा माल आता है, अथवा एल्यूमिनियम तैयार उत्पाद आदि ट्रक में तोला जाता है। तोलने के बाद एल्यूमिनियम तैयार उत्पादों को बाहर निर्यात किया जाता है। इन्हीं सब तुलाचौकी का रखरखाव केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला के अंतर्गत आता है।

बहुत उच्च आवृत्ति सेट (VHF sets)

आप सब को VHF set यानि बहुत उच्च आवृत्ति सेट के बारे में पता ही होगा जो कि केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल का एक अहम हिस्सा है। यह इकाई की सुरक्षा प्रणाली को और भी मजबूत करता है। वैसे ही नालको आवासीय परिसर की सुरक्षा के लिए सुरक्षा प्रहरी आवश्यक संसाधनों का प्रयोग करते हैं।

केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला इन सब संसाधनों को मरम्मत तथा रखरखाव करता है।

वास्तविक काल डेटा अधिग्रहण प्रणाली (RTDAS)

वास्तविक काल डेटा अधिग्रहण प्रणाली उन नमूनों के संकेतों की प्रक्रिया है जो वास्तविक विश्व भैतिक स्थितियों को मापते हैं और परिवर्तित करते हैं जिन्हें कंप्यूटर द्वारा संचालित किया जाता है। प्रद्रावक इकाई में डेटा अधिग्रहण प्रणाली द्वारा प्रदूषण संबंधी डेटा जैसे हाइड्रोजन फ्लोराइड (HF), धूल (Dust), सल्फर डाइऑक्साइड (Sox), नाइट्रोजन ऑक्साइड (Nox), PM 2.5 आदि ऑनलाइन राज्य स्तरीय एवं केन्द्र स्तरीय प्रदूषण बोर्ड को संचार माध्यम से भेजा जाता है। इन सब ऑनलाइन डेटा प्रणाली का रखरखाव भी केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला के अंतर्गत आता है।

दूषित एवं मल जल उपचार संयंत्र (Waste & sewage water treatment plant)

प्रद्रावक इकाई में एल्यूमिनियम प्रोसेसिंग के दौरान दूषित एवं गंदे जल उत्पन्न होते हैं, जो कि व्यवहार्य नहीं है। उसी दूषित एवं गंदे जल को उपयोगी बनाने के लिए दूषित एवं गंदे जल उपचार संयंत्र का निर्माण किया गया है, जिसमें जल के प्रवाह की मात्रा जानने के लिए जल प्रवाही मापी लगाया गया है जिसके रखरखाव का काम केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला के अंतर्गत आता है।

अस्पताल उपकरण :

केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला में प्रद्रावक इकाई संबंधित उपकरणों के मरम्मत के साथ ही साथ अस्पताल उपकरणों का भी मरम्मत अथवा रखरखाव किया जाता है। जैसे कि फिजियोथेरेपी उपकरण, ऑपरेशन कक्ष उपकरण, दन्त चिकित्सा कुर्सी, एक्स-रे-कक्ष के उपकरण आदि।

उपसंहार :

अंत में यह स्पष्ट है कि केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप में प्रद्रावक इकाई के सभी क्षेत्र और विभागों से जुड़ कर अपने नाम को सार्थक कर रहा है। इसीलिए केन्द्रीय मरम्मत प्रयोगशाला को संवेदनशील क्षेत्र में परिगणित किया गया है।

बी. सुजया लक्ष्मी
चार्जमैन श्रेणी - II
अनुगुळ

अब सब कुछ भूल जाओ

काफ़ी हो गया मान अभिमान,
अब थोड़ा मुस्कुराओ,
कौन कहेगा कल सुबह तक,
चलती रहेगी यह सांसे,

या ते आप होंगे, हम न होंगे,
या हम होंगे, आप न होंगे,
कौन कहेगा, ऐसा भी हो सकता है ,
हम दोनों नहीं होंगे,

पल-पल बदलता हैं हालात यहाँ,
किस पर भरोसा करेंगे,
जब मौत दरवाजे पर हो,
जीवन घर पर डर के मारे,

किसके लिए यह मैं मैं तू तू,
पानी के वुदवुद जैसे यह खेल,
जितना समय है आपके पास,
बस उतना ही है आपकी ताकत,

कितना मान अभिमान हो गया है अतीत ,
क्या आप कभी खुश हुए हैं ?
जब तक जीवन हाथ में है,
उसे उतना श्रद्धा से देखो,

नई सुबह की नई रोशनी में,
आइए फिर से चलें,
काफी हो गया मान अभिमान,
अब सब कुछ भूल जाओ,

अश्विनी सूतार
उप प्रबंधक (सचिवीय)
निगम कार्यालय
भुवनेश्वर

हिन्दी आजकल एवं रोजगार के अवसर

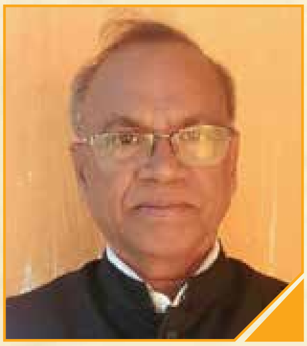

हिन्दी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी प्रचलित है। दिनों दिन पसरता क्षेत्र इसकी व्यापकता को प्रमाणित करता है। अंग्रेजी और मंडारिन के पश्चात हिन्दी तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। जयप्रकाश नौटियाल के शोध से तो यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। जिसमें हिन्दी सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा बनकर अग्रणी है। विश्व की लगभग सभी महत्वपूर्ण संस्थानों में हिन्दी में अध्ययन / अध्यापन की व्यवस्था है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी में संबोधन/ प्रतिनिधित्व ने हिन्दी भाषा को गौरव प्रदान किया है। जिसके साथ प्रत्येक भारतीय मजबूती के साथ खड़ा है।

तेजी से बढ़नेवाली भारत की अर्थव्यवस्था में हिन्दी प्रमुख कारक है। भारत दुनिया का एक बड़ा बाज़ार है। हर बड़ा देश अपना कारोबार भारत में स्थापित करना चाहता है जिससे उसको ज्यादा से ज्यादा मुनाफा हो। यह भारत के नजरिए से भी बहुत अच्छा है। क्योंकि इससे देश में निवेश बढ़ता है तो दूसरी तरफ हमारे युवाओं को रोजगार के नए अवसर प्राप्त होते हैं। देश में विकास होता है। लोगों के जीवन में खुशियाँ आती हैं। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पादों/ मालों के विक्रय में संचार के समस्त माध्यमों में हिन्दी का बेधड़क प्रयोग कर रही हैं। इन कंपनियों की पहुँच भारत सहित अन्य विदेशी जमीन पर है जिससे निश्चय ही हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ रही है। इस प्रकार हिंदी में करियर एक अच्छा विकल्प हो सकता है। आज हिन्दी के विद्यार्थी के पास रोजगार के नए-नए अवसर उपलब्ध हैं:

1. साहित्यकार
2. विद्यापीठ/ महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय में आध्यापन जैसे सहायक प्रोफेसर/ असोसिएट प्रोफेसर/ प्रोफेसर
3. भारतीय प्रशासनिक सेवा
4. भारत सरकार के मंत्रालयों, अधीनस्थ समस्त कार्यालयों में हिन्दी अनुवादक/हिन्दी अधिकारी/ सहायक निदेशक / उप निदेशक/ संयुक्त निदेशक/ निदेशक (राजभाषा)
5. हिन्दी सिनेमा में पटकथा लेखन
6. रिपोर्टर, प्रूफ रीडर, सम्पादन (समाचार पत्र में)
7. रिपोर्टर, प्रूफ रीडर, सम्पादन (पत्रिका में)
8. रिपोर्टर, प्रूफ रीडर, सम्पादन (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में)

हिन्दी में रोजगार से रोजगार के साथ हिन्दी भी समृध्द होती है। भाषा में सृजनात्मक लेखन से भाषा भी प्रबल होती है और साहित्यकार की यश और कीर्ति बढ़ती है। वह अपनी रचनाओं अथवा सृजनात्मकता से सदैव याद किया जाता है और वह अमर हो जाता है। साहित्य, भाषा भी समृध्द होती है जिससे एक सुंदर समाज का निर्माण होता है।

बहरहाल, हम वैश्विक समाज में, संस्कृत की महान परंपरा/ साहित्य और आधुनिकता से कदमताल मिलाए हिन्दी से भाषाई दृष्टि से सम्पन्न हैं, यह जानकार भी इतराना नहीं पाते। इसका कारण कोई और नहीं बल्कि हम स्वयं हैं। हिन्दी को अपने ही देश में विरोध सहना पड़ता है तो दूसरी तरफ अंग्रेजी के प्रति आसक्ति कम होने का नाम नहीं लेती। अगंभीरता की हद तो तब हो जाती है जब कुछ लोग यह कहते मिल जाते हैं की फलां कार्य हिन्दी में संभव नहीं। जो निर्विवाद असत्य है। अंगेजी की बैसाखी कहें या अपनी निम्न मानसिकता को छुपाने का ''अंग्रेजी सीखो पेट भरो'' नारा हिन्दी को क्षति पहुँचा रहे हैं। यद्यपि हिन्दी राजभाषा होने के साथ संपर्क भाषा के रूप में स्थापित राष्ट्रभाषा हेतु अग्रसरित है। ऐसे में अंग्रेजी बोलनेवालों की संख्या सिर्फ 3 प्रतिशत है। जाहिर है यह नाम मात्र की संख्या कुछ विशेष वर्गों तक ही सीमित है जिनका भारतीय परंपरा और गाँव के देश जिसकी आबादी 70 प्रतिशत है, से अनभिज्ञता का सूचक प्रतीत होता है।

हिन्दी एक समर्थ भाषा है। यह हमारी जिम्मेदारी होनी चाहिए कि हिन्दी को हम अपने आचरण में ले आएँ, उसके आन्दोलनों से स्वयं को आंदोलित होकर हम अपनी भूमिका सुनिश्चित करें तो संभव है हमें अनायास ही सृजित बहानों से मुक्ति मिले और शासन भी वो सब कुछ करने में सक्षम हो जिसकी अपेक्षा हम सभी को है।

कुँवर सिंह कोड़ाह
कनिष्ठ अधिकारी (सचिवीय)
एल्यूमिना परिशोधक, दामनजोड़ी

संकल्प स्वच्छता की

अक्सर जब कोई अपने देश का व्यक्ति विदेश की यात्रा कर लौटता है, तो वहाँ के वैभव और विकसित राष्ट्र की प्रशंसा करते नहीं थकता जिसमें एक बात बड़ी महत्वपूर्ण होती है और वह है स्वच्छता। स्वच्छता का सीधा अर्थ है जहां भी हमारी नज़र जाती है वहाँ साफ सफाई हो। इससे व्यक्ति और समाज दोनों सभ्य प्रतीत होते हैं। उन्हें प्रगतिशील कहा जाता है और वे स्वस्थ एवं सुंदर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। स्वच्छता एक ऐसा रूप है जो समाज को पूर्णता प्रदान करता है। स्वच्छता के लिए यह आवश्यक है कि हम इसकी शुरूआत अपने घर से करें। घर का सारा कूड़ा कचरा निर्धारित स्थान या प्रशासन की तरफ से चलाई जा रही कूड़ा गाड़ी में डालें। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल आदि स्थानों पर खाद्य सामग्री के उपभोग के पश्चात, उसका अवशेष/ कूड़ा उचित स्थान पर ही रखें। हम वहीं हैं जो अपने देश में जाने अनजाने कहीं न कहीं गंदगी फैलाते हैं जबकि अन्य देश में जाने पर वहाँ के तौर तरीकों और अनुशासन के अनुरूप रहकर वहाँ के नागरिकों की भांति ही सभ्य हो जाते हैं। आइये हम संकल्प लें कि

1. मैं बाज़ार/नुक्कड़ या जहाँ भी स्नैक्स या इस प्रकार की कोई सामग्री खाऊँगा/खाऊँगी उसका रैपर/ कागज कूड़ेदान में ही डालूंगा/ डालूंगी।
2. ट्रेन/ बस/ऑटो की यात्रा में लोगों को स्वच्छता की जानकारी दूंगा/दूंगी।
3. कूड़ेदान नहीं होने की स्थिति में स्वच्छ भारत अभियान की जानकारी दूंगा/दूंगी और संबंधित व्यक्ति से कूड़ेदान लगाने हेतु अनुरोध करूंगा/करूंगी।
4. सब्जी/ सामान खरीदते समय अपने घर से ले आए कपड़े/ कागज का बैग इस्तेमाल करूंगा/करूंगी।
5. प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करूंगा/करूंगी।
6. दोस्त या आसपास के लोगों को खुले में शौच करने से मना करूंगा/करूंगी।
7. आसपास/ मुहल्ले की सफाई तथा इसके प्रति जागरूक बनाने के लिए आरडब्ल्यूए के साथ मिलकर प्रशासन की तरफ से जारी विभिन्न कार्यक्रमों जैसे डेंगू से बचने के लिए साफ और पूरे कपड़े पहनना, कूलर की सप्ताह में एक बार अवश्य सफाई करने की जागरुकता फैलाऊँगा/ फैलाऊँगी।
8. टंकी/ टायर आदि में पानी इकट्ठा न होने देना आदि संदेश को प्रसारित करने हेतु मुहल्ले के बच्चों के साथ एक टीम बनाऊंगा/ बनाऊँगी।
9. प्रत्येक को उनका क्षेत्र बाँटकर प्रत्येक रविवार उनके क्षेत्र की साफ सफाई की रिपोर्ट लूंगा/लूँगी ।
10. इस कार्य से संबंधित सभी के विचार से परिचित होने के लिए उनमें 2 मिनट की औपचारिक वार्ता स्पर्धा आयोजित करूंगा/करूंगी।
11. हम अपने जीवन में प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करेंगे। प्लास्टिक के स्थान पर जूट अथवा कपडे से बने थैले को इस्तेमाल में ले आएंगे। जितना संभव है एकल प्लास्टिक को अपने दैनंदिन में शामिल नहीं करेंगे।
12. मंदिर के पुजारी और सबसे आग्रह करूंगा/करूंगी कि पूजा पाठ की सामग्री को नदी-नहरों में न बहाएँ। लोगों से यह विनती करूंगा/करूंगी कि वह नदी के किनारे होनेवाले अंतिम संस्कार की प्रथा को समाप्त कर इससे होनेवाले भारी प्रदूषण से नदी को बचाएँ जिससे भारत सरकार का मूल्यवान समय और इस कार्य पर होनेवाले करोड़ों रूपए को देश के विकास पर लगाया जा सके।

जाहिर है इन संकल्पों से हम अपने आसपास भी वह वातावरण तैयार कर सकेंगे जो हम विदेशों में देखते हैं । हमारे देश में कई गाँव/ नगर खुले में शौच से मुक्ति पा चुके हैं। इसमें सरकार की अहम भूमिका रही है। ऐसे में हम संयुक्त प्रयास से समाज में कोई भी बड़ा बदलाव ला सकते हैं। तो आइए हम सब मिलकर इस नव वर्ष 2023 में पुन: यह संकल्प लें कि हम स्वच्छता को अपने जीवन में शामिल करेंगे और अपने गली, मोहल्ले और समाज को साफ सुथरा एवं हरा भरा बनाएँगे। इससे देश उन्नति करेगा और हम भी।

देबकी साहु
सहायक (मानव संसाधन विकास) श्रेणी - I
एल्यूमिना परिशोधक, दामनजोड़ी

राष्ट्र की एकता में भाषाओं का योगदान

''देश वासियों के कंठों में विराजित, पूज्य भाषा है हिंदी। माँ की लोरियों में बसी ममता प्रकाश करती है हिंदी, वीरों का अभिमान, मेरे हिन्द की ज्ञान है हिंदी!''

'हिंदी'- दुनिया, विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक माने जाने वाली यह भाषा प्रत्येक भारतीय का अभिमान है। यह भाषा संस्कृत के सरलतम रूप के नाम से भी जानी जाती है। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली यह भाषा साहित्यकारों द्वारा साहित्य की रचना हेतु चुनी गई क्योंकि इस के शब्द में मन को भावुक बनाने की क्षमता है।

भारत पर अंग्रेजी शासन की समाप्ति के बाद भी अंग्रेजी भाषा का भारत में प्रचलन जारी रहा। देश के नागरिक अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा से ज्यादा/ अधिक महान सोचने लगे एवं उसकी शिक्षा देश के उमड़ते सितारें रूपी नव पीढ़ी के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो गई। वे भूल गए कि देश की आजादी के लिए देशवासियों के मन में जागृति लाने में महान हस्तियों द्वारा दी गई हिंदी के नारों की, भाषणों की एवं चिट्ठियों की अहम भूमिका है।

केवल राष्ट्रभाषा के रूप में ही नहीं कई और वजहों से भी हिंदी का देश की एकता में बड़ा योगदान है। वैसे देखा जाए तो भारत में सैंकड़ों लोग हैं जो धर्म, ईश्वर, अधर्म, पाप, पूण्य जैसी चीजों पर विश्वास रखते हैं। हमारे धर्म में विभिन्न महान धर्म ग्रंथ जैसे गीता, रामायण, वेद, उपनिषद आदि संस्कृत में लिखे गए हैं। आज वे सभी ग्रंथ हिंदी में भी उपलब्ध हैं। भारत के कोने-कोने में रहनेवाले लोग जो संस्कृत नहीं पढ़ पा रहे थे, अब अपनी संस्कृति को और विवरण के साथ जान पा रहे हैं। यह युवा पीढ़ियों को भी अपने देश एवं संस्कृति को जानने का प्रोत्साहन देता है।

आजादी की लड़ाई में भी हिंदी काव्यों एवं गानों ने देशवासियों के खून में एकता का भाव दौड़ाया है। 'मेरे देश की धरती' जैसे गाने जिन्हें सुनकर आज भी देश एक हो जाता है तब बच्चे-बच्चे के होठों पर रहते थे। आज भी हिंदी सिनेमा विश्व प्रसिद्ध है। इस भाषा में महान अभिनेताओं द्वारा बोले गए वाक्य लोगों के दिलों-दिमाग पर राज करते हैं। कई फिल्में ऐसी हैं जिन्हें पूरे देश ने एक साथ प्रोत्साहन दिया है और उससे जुड़े हैं।

विदेश में अगर चलते-चलते हिंदी में बात करते हुए दो-चार व्यक्ति मिल जाते हैं तो ऐसी खुशी मिलती है मानों बचपन में पहली बार मनाली में बरफ देखने की खुशी के बराबर हो।

भारत के हर क्षेत्र में हिंदी को प्रमुख भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है क्योंकि सभी भाषाओं में हिन्दी शब्दों की समानता है। यह दर्शाता है कि जाने में ही नहीं अनजाने में भी हिंदी देश को एक करने का कार्य करती है। अन्य भाषाएँ जैसे तेलुगु, बंगाली, बिहारी आदि राज्यों की सामाजिक बोलचाल की भाषाएँ हैं एवं यह प्रतीक हैं कि हर राज्य विभिन्नता के बाद भी राष्ट्र के लिए एकजुट होकर देशप्रेम को दिल में लिए, साहस के मशाल का रूप देकर, अहिंसा एवं सच्चाई की अग्नि में तपकर, सोना बन निखरता है एवं देश के सम्मान की आजीवन रक्षा करता है।

भारत का नाम आते ही हिंदी भाषा का खयाल मन में आता है। इस भाषा ने न केवल देश की एकता बनाए रखी है बल्कि देश की उन्नति में भी इसका विशेष योगदान है। देश का प्रतिनिधित्व करने वाले वैज्ञानिक हिंदी में एवं भारतीय भाषाओं में लिखी गई पुरानी विवरणियाँ, नुस्खों को बताकर, उनका प्रदर्शन कर भारत को कई देशों से उच्च स्तर पर ले जाते हैं। वह आदमी भी, जिसे हिंदी नहीं आती या आती भी है वह हिंदुस्तान में अपना काम चला लेता है। यह भाषा पूरे देश में बसे कोटि-कोटि नागरिकों के कंठ में विराजित है। दु:ख के समय में, खुशियाँ के बसंत में, तनाव की सर्दी में, क्रोध के ग्रीष्मकाल में या विश्वासघात की बरसात में जब देश पर भुखमरी, महामारी, आतंकवादी हमलों जैसे कई विपत्तियाँ आ जाती हैं तब सभी एक भाव से ईश्वर का नाम भी पुकारते हैं। हर भारतीय भाषा अपने आप में ही देश का गौरव है। इन भाषाओं के कारण ही हमारे भारत वर्ष की 'बहुभाषी', 'अनेकता में एकता' जैसे शब्द प्रदान किये गए हैं।

देश में विभिन्न भाषाओं का अभ्यास करने वाले लोग जब एक साथ अपनी भाषा में 'जय हिंद' का उच्चारण करते हैं, उसी क्षण भारत की एकता प्रमाणित हो जाती है। अलौकिक एवं अविस्मरणीय शब्दों एवं साहित्य और रचनाओं के असीम भंडार - संपूर्ण भारतीय भाषाएँ, भारत की एकता, विभिन्नता, संघर्ष एवं बलिदानों का अनमोल प्रतीक हैं। भक्ति की भाषा, प्रेम की भाषा, ज्ञान की भाषा, संघर्ष की भाषा, साहस एवं पराक्रम की भाषा - 'हिंदी' हिन्दुस्तान का गुरूर, विशेषता, देशभक्ति का प्रतीक एवं देश के श्रृंगार का सबसे सुंदर हीरे रूपी ज्ञान से भरा गहना है। देशवासियों के जिगर में हरदम इस भाषा का आवश्यक सम्मान प्राप्त करवाने की चाह अनंत तक जलने वाली ज्वाला जैसी भड़कती रहनी चाहिए। अत: इस प्रकार कई तरीकों/ कारणो से भारत की एकता में हिंदी एवं अन्य भाषाओं की भूमिका एवं योगदान दर्शाया जा सकता है।

क्रिपी सामल
कक्षा-8
डीपीएस, अनुगुळ

भाषाएँ हमारी पहचान

हिंदी, उर्दू, पंजाबी, तमिल, बंगाली, राजस्थानी, कन्नड़, गुजराती, मिल के सब हुए बलशाली, हैं आनोखी सबकी पहचान, जैसे हो सामग्री अनेक पर व्यंजन एक।

भारत एक विशाल देश है, जिसमें बहुत सारी सांस्कृतिक और भौगोलिक विभिन्नताएँ हैं। इसके परिणामस्वरुप देश भर में बोली जाने वाली कई अलग-अलग भाषाएं हैं। इनमें से कुछ भाषाओं को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया जाता है, जबकि अन्य को विशेष क्षेत्रों की बोलियों के रूप में स्वीकार किया जाता है। ये सभी भाषाएँ अतीत की महान भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं, जिनमें से अधिकांश कई प्रमुख भाषाई परिवार से संबंधित हैं, जैसे इंडो-आर्यन (70 प्रतिशत भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली), द्रविड़ भाषएँ (22% भारतीय द्वारा बोली जाने वाली) ऑस्ट्री - एशियाई भाषाएँ और तिब्बती - बर्मन भाषाएँ। इन कई सारी भाषाओं के बीच प्रत्येक राज्य की अपनी खुद की राजभाषा होती है। वर्तमान में भारतीय संविधान में, भारत की 22 भाषाओं को मान्यता मिली है, जिसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है।

इस निबंध के शीर्षक के अनुसार यह अवश्य एक दृढ़ सत्य है कि हमारी भाषाएँ, हमारी पहचान हैं। वे हमारी संस्कृति, स्थान, अतीत, इतिहास, मूल, सार, प्रसंग आदि का प्रतीक होते हैं। यह भाषाएँ हमारी पहचान और गौरव हैं जो हमें अलग व निराला बनाती हैं।

हालांकि हमारी परंपरा विविधता में एकता के बारे में बहुत कुछ कहती है, फिर भी एक देश, एक भाषा सिद्धांत का प्रचार करने का प्रयास किया जा रहा है। बेशक, भारत को मजबूत राजनीतिक एकजूटता की जरुरत है क्योंकि क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता और आतंकवाद राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहे हैं। लेकिन हमारे नीति निर्माताओं को यह समझना चाहिए कि सांस्कृतिक विविधता वह तत्व है जो देश के विभिन्न हिस्सों में लोगों के बीच अपनेपन की मजबूत भावना पैदा करता है। भाषाई विभिन्नता हमारे सामाजिक जीवन में सांस्कृतिक समृद्धि के नए रंग जोड़ती है और इसे नष्ट करने का कोई भी प्रयास भूमि के इस हिस्से की सुंदरता को नष्ट कर देगा।

क्या कोई कालिदास (संस्कृत), सुब्रमण्यम भारती (तमिल), रबींद्रनाथ ठाकुर (बंगाली), मीराबाई (राजस्थानी), लल्लेश्वरी (कश्मीरी) और मिर्ज़ा ग़ालिब (उर्दू) और कई अन्य प्रतिष्ठित नामों के बिना भारतीय विरासत की एक छाया की भी कल्पना कर सकता है? विभिन्न भाषाओं और बोलियों से परिचित होना व्यक्ति व समाज की अभिव्यक्ति की शक्ति को समृद्ध करता है। हर भाषा के अपने गुण होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि उर्दू की कोमलता किसी व्यक्ति की आत्मा को मोह लेती है, तो राजस्थानी एक अलग तरह का आकर्षण पैदा करती है। जब किसी एक भाषा को अन्य भाषाओं पर हावी करने का प्रयास किया जाता है, तो यह स्थानीय भाषाओं में रचनात्मकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है और आम लोगों को निराश करती है।

लेकिन यह भाषावाद कुछ बुराइयों को भी जन्म दे सकता है।

जैसे - बढ़ता क्षेत्रवाद और संकीर्णतावाद । जिसमें एक राज्य में केंद्रित विभिन्न भाषाई समूह के लोग केवल अपने राज्य के हितों के संदर्भ में सोचते हैं। यह राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार को कमजोर करता है।

- भले ही भाषाई अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान की गई हो परंतु उत्पीड़न अभी भी प्रचलित है। इसके परिणामस्वरुप कुछ जटिलताएँ और परेशान करने वाली प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं जो देश की एकता के लिए खतरा प्रतीत होती हैं।

- अलग राज्यों की मांग व राजनेताओं के स्वार्थी उद्देश्यों के कारण भाषाई संघर्ष होने हैं। राष्ट्रीय भावना का क्षरण होता है-

मुट्ठी में जो शक्ति है वह उंगलियों में नहीं

रस्सी में जो ताकत है वह धागे में नहीं...

उपरोक्त के नकारात्मक मुद्दें भी उन्हीं में खुद हैं।

जैसे भोजन में किसी सामग्री की मात्रा कम ज्यादा भोजन का स्वाद बिगाड़ देती है उसी प्रकार यदि हम अनेकता में एकता न संजोए तो सब नष्ट हो जाएगा।

भारत उन दुर्लभ देशों में से एक है जहां इतनी सारी भाषाएं मौजूद हैं और देश भी मजबूती से चल रहा है।

अत: हमारे इस अनोखी भाषाई पहचान को संरक्षित रखने के लिए तथा इसे अभिशाप नहीं बल्कि इसे वरदान बनाए रखने के लिए हमें एकजुट होकर रहना अत्यंत आवश्यक है।

सोनाली लेंका
कक्षा-6
डीपीएस, अनुगुळ

भारत की भाषाई एकता और समानता

अलग-अलग संस्कृति और भाषाएँ होते हुए भी हम सभी एक सूत्र में बंधे हुए हैं तथा भारत की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। संगठन ही सभी शक्तियों की जड़ है। एकता के बल पर ही अनेक निर्माण हुआ है। प्रत्येक वर्ग में एकता के बिना देश कदापि उन्नति नहीं कर सकता । एकता में महान शक्ति है। भारत की भाषा हिन्दी है। हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। भारत और विदेश में करीब 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं तथा इस भाषा को समझने वाले लोगों की कुल संख्या करीब 90 करोड़ है। हिंदी भाषा का मूल प्राचीन संस्कृत भाषा है। इस भाषा ने अपना वर्तमान स्वरूप कई शताब्दियों के पश्चात हासिल किया है और बड़ी संख्या में बोलीगत विभिन्नताएं अब भी मौजूद हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है जो कि कई अन्य भारतीय भाषाओं के लिए प्रयुक्त होती है। हिन्दी के अधिकतम शब्द संस्कृत से आए हैं। भारत की भाषाओं की विशेषता उनके अनेकता में एकता का होना है। एकता में शक्ति है। अत: हमें भाषाओं की एकता के महत्व को समझना चाहिए। हमारे भारत देश की एकता भाषाई समानता है। भारत में अनेक भाषाएं और बोलियाँ बोली जाती हैं, इसलिए हमारे देश की एक कहावत है- ''कोस-कोस पर बदले पानी और चार कोस पर बानी।'' इसका अर्थ है कि हमारे देश में एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और चार कोस पर भाषा यानी वाणी भी बदल जाती है। यही हमारे प्रिय भारत की भाषाई एकता समानता है जो वैश्विक स्तर पर हमें एक नयी पहचान देता है, जिस पर हम गर्व कर सकते हैं।

शाश्वती दास
कक्षा-8
डीपीएस, अनुगुळ

अपनत्व का अहसास करातीं भारतीय भाषाएँ

दुनिया भर मे जब मानव कम्प्यूटर बनाने के लिए भाषा का चयन किया जा रहा था, तब सबसे पहला नाम आया भाषा की जननी संस्कृत का। क्योंकि संस्कृत मे जो पढ़ा जाता जाना है वही लिखा जाता है। हिंदी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं से एक है। भारतीय भाषाओं की एक अलग परिभाषा होती है। हर भाषा जो यहाँ बोली जाती है, सब में भले अंतर हो, लेकिन सभी की एक अलग सौम्यता, कशिश और पहचान है। भारत में कहा यह जाता है, कि कदम कदम पर बोली बदल जाती है। भारत के हर प्रान्त में एक अलग भाषा आपको सुनने को मिलेगी। भारत की यही तो खासियत है। मुख्यत: भारत में 22 प्रमुख भाषाएँ बोली जाती हैं। भारत की भाषाओं में सिर्फ शब्द नहीं भाव होते हैं। उसकी परंपरा एवं संस्कृति झलकती है इन भाषाओं से। आज भले हिंदुस्तान में अंग्रेजी को ज्यादा प्रमुखता मिलती है, लेकिन आज भी भारत अपनी मीठी बोली के लिए प्रसिद्ध है। भारत नाम के साथ जुड़ा होता है उसकी राजभाषा हिंदी का नाम। बाल गंगाधर तिलक ने कहा था ''मैं उन लोगों में से हूँ जिन्हें लगता है कि हिन्दी भारत की राजभाषा हो सकती है'' और इसी भाषा के सम्मान में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

नन्दिनी प्रियदर्शनी दास
कक्षा-9
डीपीएस, दामनजोडी

हिन्दी : मूल से संस्कार तक

हिंदी- एक भाषा के रूप में यह न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन के मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कार की सच्ची परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवत: सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है। भाषा में अनेक प्रकार की रुचि रखते हुए यह भारत देश को बड़े गर्व और शौर्य के साथ जीवन का नया रंग देता है।

हिन्दी के देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व दिखता है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए खास तौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी का उपयोग करने के लिए साल 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द द्वारा देश भर में उत्कृष्ट कार्य हेतु विभाग/व्यक्ति को पुरस्कृत किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सभी देशवासियों को 'हिन्दी दिवस' पर बधाई दिया है। भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिन्दी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिन्दी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिन्दी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिन्दी में ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरुरी है।

भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिए। इस कारण हिंदी दिवस के दिन उन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिन्दी का ही उपयोग करें। हिन्दी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर के दिन केंद्र सरकार के मंत्रालय, विभाग एवं अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन के द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारने के इसी दिन का एवं हिंदी भाषा के विशेष स्वरूप का महत्व स्वीकारा जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि हिंदी भारत की एकता एवं भाषाई समृद्धि का प्रतीक है।

अंत में यह समझना जरूरी है कि हिन्दी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भी भाषा की तरह हिन्दी भी मौलिक सोच की भाषा है। बस आवश्यकता है तो एक शुरुआत की। हम मूल की तरफ लौटें। इससे हम भाषाई तौर पर समृद्ध भी होंगे और हिन्दी में विन्यस्त परंपराएँ भी जीवित रहेंगी।

स्वीटी श्वेतलीना
कक्षा-9
डीपीएस, दामनजोड़ी

भाषागत साधन से राष्ट्रीय एकीकरण

राष्ट्र एकता एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया व भावना है जो किसी राष्ट्र अथवा देश के लोगों में भाई-चारा अथवा राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं अपनत्व का भाव प्रदर्शित करती है। एक देश में रह रहे लोगों के बीच एकता की शक्ति के बारे में लोगों को जागरूक बनाने के लिए 'राष्ट्रीय एकता' एक तरीका है। अलग संस्कृति, नस्ल, जाति और धर्म के लोगों के बीच समानता लाने के द्वारा राष्ट्रीय एकता की जरूरत के बारे में यह धारणा लोगों को जागरूक बनाता है।

इस देश में व्यक्तिगत स्तर के विकास को बढ़ाने के लिए भारत में राष्ट्रीय एकीकरण का बहुत महत्त्व है और यह इसे एक मजबूत देश बनाता है। पूरी तरह से लोगों को इसके प्रति जागरूक बनाने के लिए, राष्ट्रीय एकता दिवस, राष्ट्रीय एकीकरण सप्ताह आदि विशेष दिन को मनाया जाता है।

भारत विश्व का एक विशाल देश है। इस विशालता के कारण इस देश में हिंदू, मुस्लिम, जैन, ईसाई, पारसी तथा सिक्ख आदि विभिन्न धर्मों तथा जातियों एवं सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। अकेले हिंदू धर्म को ही ले लीजिए; यह धर्म भारत का सबसे पुराना धर्म है जो वैदिक धर्म, सनातन धर्म, पौराणिक धर्म तथा ब्रह्म समाज आदि विभिन्न मतों संप्रदायों तथा जातियों में बंटा हुआ है। लगभग यही हाल दूसरे धर्मों का भी है। कहने का मतलब यह है कि भारत में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, जातियों तथा प्रजातियों एवं भाषाओं के कारण आश्चर्यजनक विलक्षणता तथा विभिन्नता पाई जाती है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न धर्म, क्षेत्र, संस्कृति, परंपरा, नस्ल, जाति, रंग और पंथ के लोग एक साथ रहते हैं। इसलिए राष्ट्रीय एकीकरण बनाने के लिए भारत में लोगों का एकीकरण जरूरी है। एकता के द्वारा अलग-अलग धर्मों और संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। वहाँ पर कोई भी सामाजिक या विचारात्मक समस्या नहीं होगी। भारत में इसे विविधता में एकता के रूप में जाना जाता है हालाँकि यह आसान नहीं है लेकिन हमें इसे मुमकिन बनाना है।

भारत एक ऐसा देश है जो अपने विभिन्न धर्म, क्षेत्र, संस्कृति, परंपरा, नस्ल, जाति, रंग और पंथ के लिए जाना जाता है। लेकिन इस बात को अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि यहाँ निवास कर रहे लोगों की सोच में विविधता के कारण ये अभी भी विकासशील देशों में आता है। यहाँ रह रहे लोग अपनी संस्कृति और धर्म के अनुसार अलग-अलग सोचते हैं जो व्यक्तिगत और देश के विकास की गति को प्रभावित करने का एक बड़ा कारण है।

भारत अपनी विविधता में एकता के लिए प्रसिद्ध है लेकिन विकास के लिए हमें एक-दूसरे के विचारों को स्वीकार करना होगा। हमारे देश में सभी मानते हैं कि उनका धर्म ही सबसे बेहतर है और जो भी वे करते हैं, वही सबसे ठीक है। अपने खुद के फायदे के लिए केवल खुद को अच्छा साबित करने के लिए यहाँ यह रह रहे विभिन्न नस्लों के लोग आपस में शारीरिक, भावनात्मक, बहस और चर्चा आदि द्वारा लड़ते हैं। अपने देश के बारे में एक साथ होकर सोचने की जरुरत है। ऐसा न करके ना ही सिर्फ वह राष्ट्रीय एकता पर आघात करते हैं बल्कि हमारे देश की प्रगति को भी बाधित करते हैं।

भारत एक बहु-जातीय और बहु-भाषाई देश है जहाँ विभिन्न जाति के लोग एक साथ रहते हैं और अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं। राष्ट्रीय एकता का मतलब ही होता हैं राष्ट्र के सब घटकों में भिन्न-भिन्न विचार और विभिन्न आस्थाओं के होते हुए भी आपसी प्रेम, एकता और भाईचारे का बना रहना।

हमारे भारत वर्ष में राष्ट्रीय एकता के लिए भावात्मक एकता अत्यन्त आवश्यक है। भावात्मक एकता बनाए रखने के लिए भारत सरकार हमेशा प्रयत्नशील रही है। हमारे संविधान में ही धर्म निरपेक्ष, समाजवाद समाज की परिकल्पना की गई है। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में भी ऐसे अनेक संगठन हैं जो राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। सच्चा साहित्य भी पृथकतावादी प्रवृत्तियों का विरोधी रहा है।

राष्ट्रीय एकीकरण में कमी के कारण यहाँ सभी सामाजिक समस्याओं का उदय हो रहा है। हम सभी को इस राष्ट्रीय एकीकरण के वास्तविक अर्थ, उद्देश्य और जरूरत को समझना चाहिए। भाषा इसका एक प्रमुख साधन है। आइए इस साधन से एकता को साधें। इससे हम भारतीय संविधान की प्रस्तावना को सही मायने में चरितार्थ कर पायेंगे

राज नन्दिनी सेठी
कक्षा - 10
डीपीएस, अनुगुळ

भारतीय भाषाएँ : विभिन्नता में एकता

प्रस्तावना :

सामान्यत: भाषा को वैचारिक आदान प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं, यह हमारे समाज के निर्माण, विकास, अस्मिता, सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण साधन है। भाषा के बिना मनुष्य अपूर्ण है और अपने इतिहास और परंपरा से विछिन्न भी।

दुनिया में हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। हर व्यक्ति बचपन से ही अपनी मातृभाषा या देश की भाषा से तो परिचित होता है, लेकिन दूसरे देश या समाज की भाषा से जुड़ नहीं पाता है।

भाषा द्वारा ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। राष्ट्र को सक्षम और धनवान बनाने के लिए भाषा और साहित्य की सम्पन्नता और उसका विकास परम आवश्यक है।

भाषा का महत्व :

भाषा का भावना से गहरा सम्बन्ध है और भावना तथा विचार व्यक्ति के आधार हैं। यदि हमारे भावों तथा विचारों का पोषक रस किसी विदेश अथवा परायी भाषा से मिलता है तो निश्चय ही हमारी वैयक्तिकता भी भारतीय अथवा स्वदेशी न रहकर विदशी हो जाएगी।

प्रत्येक भाषा और प्रत्येक साहित्य अपने देश काल और धर्म से परिचित तथा विकसित होता है। उस पर अपने महापुरूषों और चिंतको का, उनकी अपनी परिस्थितियों के अनुसार प्रभाव पड़ता है। अन्य देश, काल और समाज भी उस सुंदर स्वास्थ्यकारी संस्कृति से प्रभावित हो, यह आवश्यक नहीं है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व का समुचित विकास और उसकी शक्तियों को समुचित गति अपनी मातृभाषा में जितनी सहज गति से संभव है, उतनी किसी भी अन्य भाषा से संभव नहीं है।

भारत की भाषायी अनेकता में एकता

निश्चित ही भारत अपनी भाषिक और सामाजिक संरचना के इतिहास और भूगोल के कारण भाषा और समाज के अध्येताओं के लिए अध्ययन का एक समस्यामूलक, किंतु रोचक विषय बना हुआ है। संसार में किसी दूसरे इतने विशाल और प्राचीन और वैविद्यपूर्ण राष्ट्र के न होने के कारण वह अनेक भ्रांत और भ्रामक धारणाओं का शिकार होता रहा है।

वस्तुत: समूचे दक्षिण एवं पूर्व एशिया में भारतीय उपमहाद्वीप एक ऐसा भाषिक क्षेत्र है, जो अनेकता में एकता का अत्यन्त सटीक निदर्शन प्रस्तुत करता है।

क्रम संख्या	भाषा का नाम	भाषा परिवार का नाम	भाषा के रूप में प्रयोग आरम्भ का काल
1	असमिया	भारतीय आर्यभाषा	1400 ई.
2	बंगाली	भारतीय आर्यभाषा	1000 ई.
3	गुजराती	भारतीय आर्यभाषा	400-1500 ई.
4	हिन्दी	भारतीय आर्यभाषा	1000 ई.
5	कन्नड़	द्रविड़ परिवार	500 ई.
6	कश्मीरी	भारतीय आर्यभाषा	1400 ई.
7	मलयालम	द्रविड़ परिवार	1500 ई.
8	मराठी	भारतीय आर्यभाषा	1300ई.
9	ओड़िया	भारतीय आर्यभाषा	1300-1400 ई.
10	पंजाबी	भारतीय आर्यभाषा	1700 ई.
11	सिंधी	भारतीय आर्यभाषा	1700ई.
12	तमिल	द्रविड़ परिवार	1100ई.
13	तेलुगु	द्रविड़ परिवार	1100 ई.
14.	उर्दू	भारतीय आर्यभाषा	1800 इ.

भाषायी अनेकता में एकता के कारक

भारत की उत्कृष्ट भाषा संस्कृत में विरचित ग्रंथ सभी

आधुनिक भारतीय भाषाओं में साहित्यिक रचनाओं के आधार रहे हैं। प्राचीन महाकाव्य ''रामायण'' और ''महाभारत'' सभी भारतीय भाषाओं में बार-बार अनूदित होते रहे हैं। इसके अलावा इन महाकाव्यों के पात्र, इन रचनाओं के उपाख्यान सभी भाषाओं में मौलिक लेखन के भी आधार रहे हैं।

भारत की अनेक भाषाएँ अपनी शब्दावली और संरचना की दृष्टि से पर्याप्त भिन्न हैं। लेकिन इन्होंने एक दूसरे को काफी प्रभावित किया है। इनमें कुछ सामान्य विशेषताएँ समाहित है।

इस तरह हम पाते हैं कि देश के विभिन्न भूभाग में अलग-अलग तरह की भाषाएँ बोली जाती हैं। किन्तु इन सभी भाषाओं का मूल स्रोत एक ही है, जो कि पूरे भारत को एक सूत्र में बाँध के रखता है।

भारत के सभी लोगों में बौद्धिक अवचेतना, सांस्कृतिक संस्कार, विचार का मुख्य स्रोत केवल एक ही है। वस्तुत: लोगों की सांस्कृतिक विशिष्टताओं के गुणों को पहचानने का सबसे बढ़िया तरीका समूह के लोक साहित्य, आम लोगों द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले लयबद्ध गीतों आदि का विवेचन करना हो सकता है। सामाजिक समूह की भाषा और संस्कृति लोक साहित्य, लोकगीतों में संचित रहती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत के रूप में सहज ही प्राप्त होती रहती है।

''अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति का सार है।'' भारतवासियों में एक सम्मान चरित्र या भारतीय चरित्र एवं व्यक्तित्व है, जिसे हम घटकों में विभाजित नहीं कर सकते हैं।

भारत की मौलिक एकता एवं भाषा का योगदान:

''किसी भी देश की मौलिक एकता की बात करने का अर्थ है- इस देश के मूल्यों, आदर्शों, विश्वास, सामाजिक जीवन, आध्यात्मिक विचारों, परम्पराओं तथा व्यवहार आदि की एकता पर विचार करना।''

एकता तभी स्थापित हो सकती है, जब किसी देश की संस्कृति में एकताबद्ध होने की क्षमता हो। संस्कृति की जड़ें मजबूत होने पर ही एकता संभव हो सकती है। इसके लिए समन्वय, सहिष्णुता तथा उदारता होना बहुत आवश्यक है।

विविधता में एकता उत्पन्न करना किसी भी संस्कृति का विशेष लक्षण है। संस्कृति ही देश में परस्पर विरोधी विचारों के लोगों, विरोधी संप्रदायों, विभिन्न धर्मावलम्बियों आदि में एकता की स्थापना कर सकती हैं।

देश की संस्कृति का आधार मुख्यत: वहाँ की साहित्यिक धार्मिक, सामाजिक रचनाओं पर निर्भर करता है। इन सभी का विकास एक ही स्रोत पर यदि हो तो विभिन्न असमानताएँ होते हुए भी मूलत: एकीकृत होकर रही हैं।

भाषागत विभिन्नता में एकता:

भारत में भाषाओं की बहुतायत है। एक गणना के अनुसार यहाँ पर लगभग 180 भाषाएँ प्रचलित हैं, ऐसा होना स्वाभाविक ही है। जहाँ पर विभिन्न जातियाँ होंगी, वहाँ पर भाषाओं में भी पर्याप्त विभिन्नता होगी। द्रविड़, कोल, आर्य, इरानी, यूनानी, हूण, तुर्क, अरब, पठान, मंगोल, इचु, फ्रेन्च, अंग्रेज आदि की भाषा अलग-अलग रही, परन्तु जब उन्होंने भारत में बसना शुरू किया तो एक दूसरे को समझने और विचार के आदान प्रदान के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता पड़ी।

शनै: शनै: माध्यम रूप में भाषागत एकता आने लगी। प्राचीनकाल में संस्कृत और बाद में हिन्दी भारत के अधिकांश भाग की भाषा बनी। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो पता चलेगा कि भारत में संस्कृत का पुट है। बांग्ला, तमिल और तेलुगु पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है।

मुसलमानों के आगमन पर उर्दू का प्रचलन हुआ। अंग्रेजों के आने पर अंग्रेजी का प्रसार हुआ। इतना सब कुछ होते हुए भी भाषागत टकराव नहीं हुआ। स्वाधीन भारत ने भाषागत विभिन्नता को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दी ।

भाषायी एकता भी सांस्कृतिक एकता को दृढ़ करती है। पंजाब में मुसलमान पंजाबी बोलता है, तो बंगाल में मुसलमान बांग्ला बोलता है। एक प्रांत के सभी निवासी एक ही भाषा बोलते हैं। धर्म भिन्न भिन्न होते हुए भी उनकी बोल-चाल और व्यवहार में एकता है।

देश में 22 राष्ट्रीय भाषाएँ है, परंतु संपर्क भाषा के रूप में सब राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही प्रयोग करते है।

भारतीयता एक संस्कृति:

भारत में रहने वाले सभी प्रांतों के निवासी चाहे जो भी भाषा बोलते हो, चाहे जिस धर्म का पालन करते हों, सब एक ही है। कोई हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन कुछ भी हो परन्तु पहले वे भारतीय हैं। हमारे प्राचीनतम विचारकों का जीवन सूत्र ''वसुधैव कुटुंबकम'' भारतीयों की उदारता का जीवन प्रमाण है। यहाँ विभिन्न आस्थाओं वाले लोग सदियों से साथ साथ रहते चले आए हैं। अपनी विभिन्नताओं को रखते

हुए भी ये सब मन और संस्कार में लगभग एकाकार हो गए हैं। भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति आस्था उन्हें भारतीय संस्कृति का प्रवक्ता बना देती है।

देश की एकता में हिन्दी भाषा का महत्व :

देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की है। हिन्दी और प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएँ लोगों तक पहुँचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा ''विश्व हिन्दी सम्मेलन'' और अन्य अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिन्दी के अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का काम किया जा रहा है। विश्व भर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को के सात भाषाओं में हिन्दी को भी मान्यता मिली है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में हिन्दी की गूंज सुनाई देने लगी है।

आगे आने वाले समय में उम्मीद है, शीघ्र ही हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की अधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिन्दी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारतीयों एवं भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है।

हिन्दी जन आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिन्दी के महत्व को गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर ने बड़े सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था,

''भारतीय भाषाएँ नदियां हैं, हिन्दी महानदी''

सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिन्दी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बन कर उभरी है।

आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिन्दी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा विकास एवं एकता के लिए भारतवासियों से अपेक्षा :

भाषा वही जीवित रहती है, जिसका प्रयोग सामान्य जनमानस के बीच किया जाता है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको प्रचारित करना चाहिए। हिन्दी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और प्रबल होगी।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिन्दी में काम को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिन्दी शब्दावली भी तैयार की है।

राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिन्दी में ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढावा दिया जा रहा है। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक एवं अच्छे अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास की अत्यन्त आवश्यकता है।

सम्पर्क भाषा :

अनेक भाषाओं की उपस्थिति के कारण जिस सुविधाजनक विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति, राज्य-राज्य, राज्य-केन्द्र तथा देश विदेश के बीच सम्पर्क स्थापित किया जाता है, उसे सम्पर्क भाषा की संज्ञा दी जाती है।

सम्पर्क भाषा की आवश्यकता एवं महत्व :

बहुभाषा-भाषी देशों के लिए सम्पर्क भाषा की आवश्यकता ज्यादा होती है, उसका विशेष महत्व होता है। राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिहाज से आपसी संबंध बनाये रखने के लिए एवं भावनात्मक जुड़ाव के लिए संपर्क भाषा जरूरी होता है। इसलिए एक राष्ट्र एवं एक भाषा की बात होती रहती है। एक राष्ट्र एवं एक भाषा का कदापि यह मतलब नहीं है कि दूसरी भाषाओं को पीछे धकेल दिया जाए। कई बहुभाषी दोशों में एक से अधिक भाषाएँ सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहार में लायी जाती है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भारत ही है, जहाँ पर हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी भी संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही है। दो भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी राज्यों के लोग तब तक एक दूसरे से संपर्क नहीं कर सकते, जबतक कि उनके मध्य भाषायी माध्यम उपलब्ध न हो। यह माध्यम सम्पर्क भाषा के द्वारा ही उपलब्ध हो सकता है।

सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप व विकास :

बहु भाषिकता की दृष्टि से भारत सम्भवत: विश्व भर में

सर्वाधिक विविधताओं वाला देश है। सैंकड़ों भाषाएं यहाँ बोली जाती है। आदिकाल से ही हिंदी सम्पर्क-भाषा की भूमिका का निर्वाह करती रही है। हिन्दी साहित्य का आरम्भ करने वाले सिद्धों, जैनियों एवं नाथ पंथी योगियों ने 8वीं से 12वीं शताब्दी तक समस्त भारत में घूम घूम कर सम्पर्क भाषा का विकास किया: यह समन्वित भाषा हिन्दी ही थी। मध्यकाल में भारत के दक्षिण के आचार्यों में बल्लभाचार्य, रामानुज आदि ने सम्पर्क भाषा के महत्व को समझा और हिन्दी को संप्रेषण का माध्यम बनाया। भारतीय इतिहास में हिन्दी को सभी कालों में भरपूर संप्रेषण मिला, जिसकी वजह से हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित हुई। यह कड़ी आधुनिक काल में अंग्रेजों के विरुद्ध और मजबूत हुई।

हिन्दी का वर्तमान गौरवपूर्ण है। उसकी भूमिका आज भी सामान्य जन-मानस को जोड़ने में सभी भाषाओं की अपेक्षा सबसे अधिक कारगर है।

(भारत) संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होनेवाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप हैं।

{(संविधान का अनुच्छेद 343(1)}

उपसंहार :

भारत एक विविधता से भरा हुआ देश है, विभिन्न समाज, संस्कृति और भाषाएं हैं। यहाँ पर कई भाषा परिवारों की भाषा बोली जाती है। यहाँ तक सभी राज्यों की अपनी-अपनी भाषा है। कई राज्यों में अभी भी संपर्क भाषा हिन्दी नहीं है। सही अर्थो में भारत बहुभाषी समाज है और यह भाषाई विविधता राष्ट्र को मजबूती है, न की कमजोरी।

स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी की वकालत किया। हिन्दी भाषा में ही यह क्षमता थी कि वह सम्पूर्ण देश को आपस में जोड़ सके।

आज़ादी मिलने के बाद, देश का सर्वांगीण विकास हुआ। औद्योगीकरण, यातायात तथा संचार साधनों के विकास होने के बाद जब अन्तर्देशीय प्रवास बढ़ा इन सम्पर्क भाषा की तीव्र आवश्यकता महसूस हुई। इस स्थिति में हिन्दी भाषा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आज के औद्योगिक एवं विकसित युग में हम देश के किसी भी कोने में जाए, हम एक संवाद स्थापित कर सकते हैं। हमारे पोषाक, भाषा, संस्कृति अलग होते हुए भी हम एकता का सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं।

प्रवीण कुमार उपाध्याय
वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र, नालको, अनुगुळ

पाठकों से अपील

1. विदित है कि 'अक्षर' पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य नालको की महत्वपूर्ण गतिविधियों से परिचित होना व नालको कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों में हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार कर उनकी रचनामकता का विकास करना है।
2. पत्रिका में प्रकाशन हेतु रचनाएँ प्रमुख रूप से तकनीकी आलेख, अर्थपूर्ण/ भाव पूर्ण कविता, साहित्य, संस्कृति व समकालीन विषय सम्बद्ध हो।
3. रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना नाम, पदनाम, कर्मचारी संख्या अवश्य लिखें एवं पासपोर्ट आकार का नवीन फोटो प्रेषित करें।
4. कार्मिकों से संबद्ध/आश्रित रचनाकार भी इस पत्रिका में अपनी रचनात्मक अवदान दे सकते हैं।
5. पत्रिका में प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओं को सम्मानित किए जाने का प्रावधान है।
6. पत्रिका में प्रकाशन हेतु रचनाएं केवल मंगल अथवा निर्मला फॉन्ट में एम एस वर्ड में टंकित होनी चाहिए।
7. पत्रिका को रचनामक दृष्टि से समृद्ध बनाने हेतु पाठकों के सुझाव हमारा उत्साहवर्धन करते हैं। अत: पाठक अपने सुझाव से हमें अवगत कराएं, इसकी हमें हार्दिक अपेक्षा है।
8. रचनाएं मूल व अप्रकाशित होनी चाहिए।
9. रचना की विषयवस्तु स्पष्ट हो, सकारात्मक विचार दृष्टि हो, जिससे पाठक प्रेरित होकर अपने ज्ञान में वृद्धि करें।

-संपादक

देश की एकता में हिंदी और भारतीय भाषाओं का योगदान

भाषा मानव समाज की अप्रतिम उपलब्धि है। भाषा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषण का सर्वसुलभ व सशक्त साधन है। तात्विक रूप से भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसके माध्यम से मानव समूह विचार-विनिमय करता है। इन्हीं ध्वनि प्रतीकों या शब्दों के भाव शब्द या भाषा द्वारा ही मानव समाज में प्रचलित होते हैं । शब्द की इसी महत्ता के कारण 'सर्वम शब्देन भासते' तथा 'शब्दब्रह्म की परिकल्पना साहित्य जगत में प्रचलित है। काव्यदर्श में भाषा की शब्दात्मक महिमा की ओर संकेत किया गया है ''इतम अन्धतम: कृत्यनं जायेत भुवन त्रयं। यदि शब्दाहव्यं ज्योतिरासंसारम न दीप्यते।'' इसका अभिप्राय है कि यदि शब्दरूपी ज्योति न होती तो यह संपूर्ण जगत अंधकार में ही रहता अर्थात अव्यक्त ही रह जाता। वस्तुत: भाषा ही ज्ञान का सर्वसुलभ माध्यम है। इतना ही नहीं, भाषा ही देश की सच्ची पहचान, उस देश की संस्कृति की संवाहिका होती है। किसी भी राष्ट्र की वैचारिक एवं सामाजिक एकता का आधार भी भाषा ही है।

राष्ट्र की अवधारणा में तीन तत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं - भाषा, संस्कृति एवं देश की भौगोलिक परिसीमा अर्थात् मातृभूमि। वस्तुत: भाषा ही संस्कृति का आधार है। भाषा एवं संस्कृति उस देश की भूमिका निर्विवादरूप से महत्त्वपूर्ण है। ऋग्वेद की ऋचा में '' इला सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मया भुव:''' के द्वारा स्पष्ट भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्र के नागरिकों की भावनात्मक एकता एवं सांस्कृतिक चेतना का मूल आधार भाषा है। भाषा मानव को बाँधने की अपूर्व शक्ति है। संस्कृत साहित्य में भाषा की इस शक्ति के संबंध में कहा गया है कि **शब्देष्वाश्रिता शक्ति: विश्वस्यास्य निबंधिनी** अर्थात शब्द शक्ति ही संपूर्ण विश्व को बाँधनेवाली है। विचार-विनिमय मानव एकता का सबल सूत्र है। भाषा का मूल आधार है भाव सम्प्रेषण। सम्प्रेषण से ही सभी सामाजिक कार्य-व्यापार निष्पादित किए जाते हैं। विचारों की एकता राष्ट्र के नागरिक की सबसे बड़ी एकता होती है।

हिन्दी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के तहत राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हिंदी हजार वर्ष से हमारे सांस्कृतिक विरासत एवं साहित्य की भाषा के साथ-साथ जनता की संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित रही है। संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अन्य अनेक बोलियों को इसने आत्मसात किया है। यह हमारे संस्कृत भाषा की ज्येष्ठ पुत्री एवं उत्तराधिकारिणी तथा सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। धर्म, अध्यात्म, दर्शन तथा साहित्य के क्षेत्र में पहले जो काम संस्कृत भाषा ने किया, वही कार्य आज हिंदी भाषा कर रही है। आज वेद, उपनिषद, स्मृतियों, गीता, रामायण, महाभारत की टीकाएं एवं भाष्य हिन्दी में उपलब्ध हैं। ज्ञान का अक्षय एवं अपार कोश जो संस्कृत में था वह आज हिंदी के भक्तिकाल के कवियों जैसे कि सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, रहीम तथा संत समाज ने भारतीय संस्कृति के ज्ञान संपदा को हिन्दी में आपूरित कर दिया। उन्नीसवीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण के पुरधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदभाष्य हिंदी में किए तथा अपना महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश हिंदी में लिखा। इस प्रकार इसकी जड़ें हमारी सांस्कृतिक दार्शनिक तथा धार्मिक पृष्ठभूमि में गहरे पैठी हुई है। संस्कृत, पालि, प्राकृत अपभ्रंश, शैरसेनी, मगधि, अवधि, ब्रज, अरबी, फारसी, उर्दू की शब्द संपदा को आत्मसात कर यह भाषा समुच्चय बन गई है। हिंदी का प्रयोग हिंदु-मुसलमान, सिख, ईसाई सभी करते हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन से यह बात सिद्ध है कि सिद्धों, नाथों, संतों तथा अनेक पंथों के आचार्य ने इसे अपने ज्ञान अध्यात्म तथा उपदेश के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाया। अमीर खुसरो, मलिक मुहम्मद जायसी, रहीम, रसखान आदि सूफी संतों तथा कवियों ने हिंदी में काव्य रचनाएँ की। अहिंदी भाषी प्रान्तों के अनेक मनीषियों ने हिंदी को अपनाया तथा देश को स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी के गीतों एवं नारों ने नवजागरण का मंत्र फूंका। चाहे रामप्रसाद बिस्मिल की सरफरोशी की तमन्ना हो, या श्यामलाल गुप्ता का विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का जागरण मंत्र, यह सब हिंदी के माध्यम से ही जनमानस में प्रचारित किया गया। इसी कारण से संविधान निर्माताओं ने यह अनुभव किया था कि बहुभाषी भारतवर्ष में एकता की भावना को विकसित करने की आवश्यकता है जिसके लिए हिंदी भाषा ही सर्व समर्थ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जिन महापुरुषों ने हिंदी को स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में परिकल्पना की थी उनमें बंगाल के राजा राममोहन राय का नाम आता है। उन्होंने समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधे रखने के लिए हिंदी को अनिवार्य बताया था। परवर्ती ब्रह्म समाज के यशस्वी केशवचन्द्र सेन ने सन् 1885 में अपने लेख में लिखा, **''भारतीय एकता का उपाय है सारे भारत में एक भाषा का व्यवहार हो। हिंदी भाषा को अगर भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाए तो यह कार्य सहज और शीघ्र सम्पन्न हो सकता है।''** नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कलकत्ता कांग्रेस का अध्यक्षीय भाषण हिंदी मे पढ़ते हुए कहा था, **हिंदी प्रचार का उद्देश्य किसी भी प्रान्तीय भाषा को हानि न पहुँचाते हुए केवल यह है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से किया जाता है, वह आगे चलकर हिंदी में किया जा सकता है।** महर्षि दयानंद ने अपने वैदिक धर्म के प्रचार का माध्यम हिन्दी को बनाया और उनका मंतव्य था कि **सब उन्नतियों का केंद्र स्थान एकता है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में ऐक्य आ आए, वहाँ सागर में नदियों की भाँति सार सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं ।** हिंदी के महान साहित्यकार तथा खड़ीबोली हिंदी के जन्मदाता माने जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा था, **निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति की मूल। बिन निज भाषा जान के मिटै न हिय को सूल।** इस प्रकार हम हिंदी को राष्ट्रीयता का पर्याय मानते हुए कह सकते हैं कि हिंदी भारत की भारती है, हिंदी हिंदुस्तान की हिंदी है। यह हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का मूल सूत्र है। अत: हमें अपने संविधान सम्मत भाषाओं का पूर्ण सम्मान करते हुए राष्ट्रीय भावना और एकता को परिपुष्ट करने के लिए राजभाषा हिंदी को उसके पद पर सही अर्थों में निष्ठापूर्वक स्थापित करने का संकल्प लेना चाहिए।

चिन्मय कुमार महन्त
कक्षा: 8
डीपीएस, नालको नगर, अनुगुळ

स्वस्थ विचार

चारों ओर मची है हाहाकार, कैसे करे कोई अपने सपने साकार।
देना होगा जीवन को आधार, तभी मिलेगा सभी को आकार।
क्या करे क्या न करे कोई, कैसे करे कैसे न करे कोई।
यही है बस समझना, फिर समझ से उसे सहजना।

हर एक विचारधारा को, हर एक जीवन आधार को,
दिलाना है एक नई चाह, दिखाना है एक नई राह।
गिला न करे कोई, शिकवा न रखे कोई।
सबके आशाओं को मिलाना है, सबके दिशाओं को राह दिखाना है।
तभी तो आएगी नई लहर, तभी तो आएगा नया पहर।
जब करे सभी स्वस्थ आचार, जब करे सभी स्वस्थ विचार।

स्वाति सुनीता महापात्र
अर्धांगिनी श्री सोमेश महापात्र
वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत), अनुगुळ

भारतीय भाषाएँ - एकता की धुरी

भारत की सभी भाषाएँ राष्ट्रीय एकता की प्रतीक हैं। सभी भाषाएँ संपूर्ण भारत को समृद्ध एवं विकसित बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। सभी भारतीय भाषाएँ विभिन्न प्रांतों में संपर्क भाषा, बोलचाल की भाषा तथा व्यापार की भाषा के रूप में कार्य कर रही हैं। भारतीय भाषाएँ हम सभी के जीवन मूल्यों का संस्कृति और संस्कारो का सच्चा संपादक, संप्रेषक और परिचायक हैं। भारतीय भाषाएँ भावनाओं को व्यक्त करने का सरलतम स्रोत हैं।

प्राचीन काल से आज तक सभी भारतीय भाषाओं ने देश को एक सूत्र में बाँधा है। भारतीय भाषाएँ हमारे अस्तित्व और अस्मिता का प्रतीक हैं। भारतीय भाषाएँ अलग-अलग रंगों के फूलों के समान है, जो भारत को एक सुगंधित माला में पिरोये हुए हैं। बहु संस्कृति, बहु भाषिकता, विविध खान-पान और वेशभूषा के संगम से परिपूर्ण, इस देश की भौगोलिक सीमाओं का विस्तार अनंत हैं। इस विशाल परिधि को हमारी भारतीय भाषाओं ने आपस में जोड़ रखा है।

भारतीय भाषाएँ राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय एकता की कुंजी हैं। हमारा भारत देश विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक रहा है। भारत पहले से ही काफी संपन्न और एकजुटता का स्वामित्व वाला देश रहा है। अंग्रेजों और मुगल आक्रमणकारियों ने भारत की अमूल्य संपदा को बहुत लूटा एवं बड़े-बड़े जहाजों से हमारे देश का खजाना अपने देश ले गये। हमें पुन: सोने की चिड़िया बनने के लिए अथक प्रयास करने पड़ेंगे। भारत के सभी नागरिकों को देश के नीति-नियमों से चलना होगा और जन-भागीदारी में सहयोग करना होगा। यह सभी बातों के लिए सभी नागरिकों में जुड़ाव की आवश्यकता है। जो कि भारतीय भाषाएँ ही कर सकती हैं। अत: भारतीय भाषाएँ जनभागीदारी और एकता की परिचालक हैं। भारतीय भाषाएँ देश की एकता, अखण्डता और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

भारत एकमात्र देश है, जहाँ 1000 से ज्यादा भाषाएँ है और अधिकारिक रूप से 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।

''हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।''

- राहुल सांस्कृत्यायन

शिक्षा, राजगार, तकनीक, अर्थ व्यवस्था तथा सुरक्षा जैसे विविध विषयों का विश्लेषण भारतीय भाषाओं से ही पूर्ण हो सकता है। भारतीय भाषाओं का भौतिक पक्ष लोक दक्षता, देशजज्ञान और स्थानीय उत्पादों के महत्व और बढ़ावा देने पर टीका हुआ है।

स्थानीय भाषाओं से शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आ सकती है। नई शिक्षा नीति-2020 में पाँचवी कक्षा तक आवश्यक रूप से मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं में शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है। कोई विद्यार्थी चाहे तो आठवीं कक्षा तक या उसके बाद भी अपनी मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा में शिक्षा ग्रहण कर सकता है। अपनी भाषा में सीधे आपसी अनुवाद को बढ़ावा देकर हम अपने बौद्धिक समाज को भी ताकत देंगे। भारतीय भाषाओं में न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार का होना राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ हमारी आर्थिक स्थिति को भी मजबूत बनाता है। जिस भाषा में हम सोचते हैं, अभिव्यक्त करने में सक्षम होते हैं, उसी में काम करने से बेहतर परिणाम मिलते हैं।

संस्कृत में कहा गया है:

''मातृभाषा परित्यज्ययेऽन्यभाषामुपासते
तत्र यान्ति हि ते यत्र सूर्यं न भासते...''

अर्थात जो अपनी मातृभाषा का परित्याग करके, किसी और भाषा (जैसे कि अंग्रेजी) की उपासना करते हैं, वह अंधकार के उस गर्त्त में जा पहँचता है, जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुँच पाता।

राष्ट्रीय एकता एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया व भावना है। देश में व्यक्तिगत स्तर के विकास को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय एकीकरण का बहुत महत्व है। यह देश को मजबूत बनाता है। एकता द्वारा अलग-अलग धर्मों और संस्कृति के लोग एक साथ आसानी से रह सकते हैं। हर साल 19 नवंबर से 25 नवंबर तक राष्ट्रीय एकता उत्सव और राष्ट्रीय एकीकरण सप्ताह अर्थात कोमी एकता सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

हमारे देश में राष्ट्रीय एकता के लिए भावात्मक एकता अत्यंत आवश्यक है। भावात्मक एकता बनाए रखने के लिए भारत सरकार हमेशा प्रयत्नशील रही है।

''हिन्दी आम बोल-चाल की महाभाषा है।''

-जार्ज ग्रियर्सन

भारत में विभिन्न जाति, उपजाति, रंग-रूप तथा भाषा में भिन्नता रखने वाले लोग रहते हैं। भारत की विशेषता उनकी अनेकता में एकता का होना है। संविधान के लिए हम सभी एक समान हैं। इसीलिए 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्र के न होने पर हमारा कोई अस्तित्व नहीं, इसीलिए राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए ही कानून की किताब ''सविधान'' को नीतियों से भरा गया है। किसी भी राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सार्वभौमिकता को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय एकता का होना अनिवार्य है।

भारत एक विकासशील देश है। इसकी राष्ट्रीय एकता की कड़ी को मजबूत रखने के लिए भाषाओं का आधार जरूरी है। हमें अपनी भाषायी विविधता पर गर्व होना चाहिए, हमारी भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

विभिन्न भाषाओं में अनेक पर्वों, उत्सवों और त्योहारों, दिवसों से विचार-विमर्श बढ़ता है और विचार-विमर्श से देश की एकता को मजबूती मिलती है। यही एकता और आपसी सामंजस्य राष्ट्र को सशक्त एवं संगठित बनाती है।

राष्ट्रीय एकता ही वह भावना है, जो विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, जाति, वेश-भूषा, सभ्यता एवं संस्कृति के लोगों को एक सूत्र में पिरोये रखती है। हमारा भारत देश राष्ट्रीय एकता की मिसाल है। हमें अलग-अलग भाषाओं में बाल-दिवस, शिक्षक दिवस, एकता दिवस, महापुरुषों के जन्म दिवस तथा अन्य महत्वपूर्ण दिवसों को मना कर, उनका महत्व हर नागरिकों को समझाना चाहिए। भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास का बोध अपनी-अपनी भाषाओं में हर राज्य में कराना चाहिए।

हमारा संविधान धर्मनिरपेक्षता व समाजवाद का पक्षधर है। हमारी व्यवस्था एक मिश्रित संस्कृति है। भारत, पूरे विश्व में दूसरी बड़ी जनसंख्या वाला देश है, जहाँ 1652 भाषाएँ बोली जाती हैं । हम एक बहुभाषीय-बहुजातीय देश हैं, हमें अपनी सशक्त भाषाओं से श्रेष्ठ संगठन शक्ति के आधार पर एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में उभरना है।

अंत में यह कहना चाहूँगा कि सच्चा साहित्य भी पृथकतावादी प्रवृतियों का विरोधी रहा है। हमें हर भाषा के साहित्य को पढ़ना और समझना होगा। हर भाषा में छपे लेख उपन्यास, ग्रंथ, किताबें आदि को हमें अनुवाद करके, अपनी-अपनी भाषा में उपलब्ध कराना होगा। जिससे हम सभी भाषाओं से और अच्छी तरह से जुड़ जायेंगे। भाषा साहित्यों का आदान-प्रदान ही एक सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। सभी भाषाओं में एकात्मकता का शिलान्यास बहुत जरुरी है।

“ हिन्दी किसी एक देश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।

-विलियम केरी।

भारत वर्ष में कुछ बिंदुओं द्वारा जैसे कि सांस्कृतिक एकता, रक्षात्मक निरंतरता, संविधान, कला, साहित्य, राष्ट्रीय प्रतीक, राष्ट्रीयगान, राष्ट्रीय उत्सव, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न, शिक्षा, आदि के द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा दिया जाता है।

हमें सभी भाषाओं का आदर, सम्मान और सत्कार करना होगा, जिससे कि हर भाषा का मूल्य और ताकत बढ़ेगी। इन प्रयत्नों द्वारा हर भाषा के लोग देश को एक मजबूत और सशक्त स्तंभों की श्रृंखला प्रदान करेंगे, जो कि हमारे एकता और आर्थिक-सामाजिक विकास की नींव होंगे। भारत की सारी भाषाएँ अपने में संस्कारों को समेटे हैं। कोई भी भाषा किसी भी दूसरी भाषा की जगह नहीं ले सकती। इसका कारण है उस भाषा को बोलने वाले लोग। जिनकी आत्मा बसी हुई है उनकी भाषा में। हर रीति-रिवाज, संस्कार, जीवन-मरण सब उनकी भाषा में होते हैं। जिससे वे भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार भारत की सभी भाषाएँ राष्ट्र की एकता को बृहत स्तर पर सुनिश्चित करती हैं।

मिलिंद वानखेड़े
चार्जमैन श्रेणी-III
शेलिंग प्लांट
प्रद्रावक, अनुगुळ

सांस्कृतिक धरोहर की परिचायक हैं भारतीय भाषाएँ

जिस प्रकार शब्द से अर्थ को और अर्थ से शब्द को तथा शरीर से प्राण को और प्राण से शरीर को अलग नहीं कर सकते और हिंदी भाषा को देश की एकता (अखण्डता) से। जिस प्रकार शरीर और प्राण अन्योन्याजित हैं, बिना शरीर के प्राणों का अस्तित्व नहीं और बिना प्राण के शरीर का महत्व नहीं, ठीक उसी प्रकार भाषा प्राण है और शब्द उसका शरीर। जिस प्रकार निर्जीव शरीर का कोई मृत्य नही, उसी प्रकार भाषाहीन शब्द का कोई मूल्य नही। भाषाएँ जोड़ने का काम करती हैं, यह हमारी एकता तथा विविधता की परिचायक हैं।

हमारा देश एक विशाल देश है। यहाँ पर सदीयों से कई भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषा की वजह से कभी भी हमारी एकता तथा अखण्डता पर कोई आँच नहीं आई है। ये भारतीय भाषाएँ हमें एक धागे से जोड़े हुई है। हमारे संविधान के एक अनुच्छेद में कहा गया है कि किसी व्यक्ति के साथ उसकी भाषा, धर्म, लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता और न ही ऐसा होता है। किसी एक भाषा को हो सर्वोपरि नहीं माना गया है। राजभाषा हिन्दी बनने के बाद भी हर राज्य की अपनी एक अलग भाषा है, जिसमें सरकारी काम किया जाता जाता है। विभिन्न भाषाओं को समझने में तकलीफ न हो इसलिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी साथ में किया जाता है। भारत के 28 राज्य, 8 केंद्र शासित प्रदेश में 22 राजकीय भाषाएँ हैं। भारत में इन 22 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 90% है।

उच्च न्यायालय तथा राज्यों के बीच संवाद अँग्रेजी के माध्यम से ही होता है। यह आज से नहीं बल्कि आजादी के समय से चली आ रही है और अभी तक इससे कोई परेशानी नहीं हुई है। बल्कि इसने जोड़ने का ही काम किया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन, जर्मनी, जापान जैसे अत्यंत विकसित देश अपनी भाषाओं में ही काम करते हैं। तत्कालीन सोवियत संघ (आज का रसिया) ने अंतरिक्ष में अपनी बादशाहत रुसी भाषा की बदौलत ही हासिल की थी। इसी तरह आज की उभरती हुई महाशक्ति चीन भी अपने सारे कार्य मंडारिन (चीनी भाषा) में ही करता है। इन भाषाओं ने देश को अव्वल बनाने के साथ देश को एकता के धागे में पिरोने का काम भी किया है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कविता 'निज भाषा "में उन्होंने कहा था कि निज भाषा की उन्नति से ही देश का कल्याण एवं विकास हो सकता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि हमारे देश की भाषाओं की विविधता देश की एकता और अखण्डता के अलावा कल्याण एवं विकास के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत जैसे विशाल देश में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। प्रश्न यह उठता है कि जहाँ इतनी भाषा, बोली जाती है, वो कैसे लोगों को एक सूत्र में बाँध सकती है ? इसका उतर हम सभी कहीं न कहीं जानते हैं। हम सब जानते हैं, भारत केवल भाषाओं का देश नहीं अपितु अनेक धर्मों, विविधताओं से परिपूर्ण देश है। जिसमें कई जाति, संप्रदाय मिले हुए हैं और किसी न किसी वजह से एक धागे से जुड़े हुए हैं। सनातन काल से ही हमारी देश की एकता अक्षुण्ण है।

चाहे महाराज अशोक का काल हो, या आकबर का मुगल सम्राज्य या ब्रिटिश हुकूमत, भारत अपनी भाषा की विविधता से सदैव मजबूत हुआ है न कि टूटा है। यहा प्रमाणित होता है कि भाषा की विविधता राष्ट्रीय एकता में सदैव सहायक रही है। जहाँ अन्य देशों में भाषा, धर्म की वजह से युद्ध होते रहे हैं, इसके विपरीत वहीं भारत में ऐसा कभी नहीं हुआ। यहाँ यह बात प्रासंगिक है कि जब हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला तब दक्षिण के राज्यों से इसके विरुद्ध आवाज उठी थी। ऐसा होना स्वभाविक था क्योंकि हिन्दी के राजभाषा बनने से दूसरी भाषाएँ महत्वहीन हो गई थीं। इसलिए इन मतभेद को दूर करने के लिए तथा परस्पर विकास के लिए साथ में अंग्रेजी भाषा को चुना गया। यह वस्तुत: हमारे देश में पहला अवसर था जब भाषा की वजह से मतभेद हुआ था परन्तु इस मतभेद का कारण मूलत: राजनीतिक था। भाषा की वजह से लोगों के बीच कभी मतभेद नहीं हुआ।

हमारे संविधान में भी 1 भाषा को कभी सर्वोपरि नहीं माना गया है और हर राज्य के पास अपने राज्य की भाषा में काम करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। उदाहरणत: महाराष्ट्र में

मराठी, गुजरात में गुजराती तथा तमिलनाडु में तमिल प्रमुख रुप से काम काज का हिस्सा हैं।

अगर बाहरी राज्य के लोग आकर दूसरे राज्य में काम करते हैं तो उन्हें उचित सम्मान दिया जाता है। संस्कृति भी यही कहती है- ''अतिथि देवो भव:''। यानि अतिथि भगवान स्वरुप होता है। दूसरे राज्य के लोग जब किसी और राज्य में काम करते हैं तो एकता को बढ़ावा मिलता है और एक दूसरे के लिए आपसी सम्मान और सहयोग की भाषा को भी बल मिलता है। इन सब बातों पर विचार करें तो यह कहना सही होगा कि भाषा हमें एक दूसरे से सदैव जोड़ने का काम करती हैं। अंतर्राजकीय काम काज भी बढ़ता है और लोगों में समता भी बढ़ती है। दूसरी भाषा बोलने वाले को कभी अलग नही समझा जाता।

आज संत कवि तिरुवल्लुवर का सम्मान उत्तर में उतना ही होता है जितना कि कबीर और शंकराचार्य का। हमारे देश में कभी किसी ने यह प्रश्न नहीं उठाया कि वे कौन सी भाषा बोलते हें? हम किसी भी महान विभूति का स्मरण भाषा से नहीं अपितु उनके कर्मों से करते हैं। हमारी भाषाएँ हमारी धरोहर हैं। बल्कि यह कहना उचित होगा कि ये राष्ट्रीय धरोहर हैं।

अगर हम इतिहास देखें तो हमें मालूम होता है कि सबसे बड़ी ज्ञान की पुस्तकें चाहे वह भूगोल की हों या व्याकरण की या साहित्य की, सब अलग अलग भाषा में लिखी गई थीं। लेकिन इनकी रचना करने वालों को हम आज भी स्मरण करते हैं। प्राचीन काल में पाली और संस्कृत भाषा काफी प्रसिद्ध थीं। बौद्ध धर्म जो कि पाली भाषा में है आज विश्व भर में उसके अनुयायी हैं और इसका उद्‌गम भारत से हुआ था। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। यह भी गौर करने वाली बात है कि भाषा के माध्यम से ही धर्मों का प्रचार प्रसार हुआ। चीन, जापान जैसे महाशक्तिशाली देश में भी बौद्ध धर्म के अनेक अनुयायी हैं। पाली आम जनों की भाषा बनी और इसी क्रम में संस्कृत भाषा ने भी अपना काम किया और वेद, उपनिषद की भाषा बनी। संस्कृत थोड़ी कठिन थी, इसलिए यह विद्वानों तक सीमित रही। वहीं पाली भाषा का काफी विस्तार हुआ। गौरतलब है कि दोनों भाषा देवनागरी लीपि से ही हैं।

अगर हम आजादी से पहले की घटनाओं को स्मरण करें तो भी भाषा का भारत की एकता में योगदान स्पष्ट रुप से मिलता है। शायद ही कोई सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी" न सुनी हो। आज भी उनकी कविता की पंक्ति हमारे देश में देराभक्ति की भावना भर देती है, हमें ओज देती है।

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में आई फिर से नई जवानी थी,
बुँदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खुब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।

इंन पंक्तियों को पढ़कर आज भी हमलोग भाव विभोर हो जाते हैं। इसी प्रकार सुभाष चन्द्र बोस के दिए नारे ने जन-जन को जोड़ा और क्रांति की एक नई लहर को जन्म दिया। वह नारा था- 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'। उनकी कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:

वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं। जो परवश होकर बहता है, वह खून नहीं पानी है।

मौलाना हसरत मोहानी का नारा- 'इंकलाब जिन्दाबाद" भी कई लोगों के क्रांतिकारी अभियान में जुड़ने का कारण बना।

हमारी भाषा का गौरव है कि हम अलग-अलग भाषा से पूरे देश की एकता को एक सूत्र में पिरो सकते हैं। और यही वजह है कि हमारे देशवासी अलग-अलग प्रांत, समुदाय से होते हुए भी आजादी के लिए एकजुट रहे। यह विविध भाषा का एक चमत्कार ही था, जिसके कारण आज भी हम लोग अनेक होकर भी एक हैं।

भाषा अपने समाज, साहित्य, संस्कृति की संवाहक होती है। जिसमें वहाँ के लोगों की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक स्थिति शामिल होती है। ऐसे में भाषा अपनी अतीत को भी संरक्षित रखती है और अपने आज और कल को भी। जाहिर है इतिहास, धरोहर की सबसे बड़ी साक्षी है भाषा जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्वयं को भी समृद्ध करती है। इसलिए 'सांस्कृतिक धरोहर की परिचायक हैं भाषाएँ' कहना समीचीन प्रतीत होता है।

रोहन किशन पाटिल
वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन)
क्षेत्रीय कार्यालय,
मुम्बई

डिजिटल युग में साइबर अपराध एक बड़ी चुनौती

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी से एक कदम आगे डिजिटल का हो गया है। अर्थात किसी भी वह कार्य जो पहले भौतिक रूप से किए जाते थे अब इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से किए जाते हैं। इसमें समूची प्रक्रिया, आंकड़ों का भंडारण आदि शामिल है। इससे समूचे विश्व में एक क्रान्ति आई है। इससे हमारे जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया है और हमारा जीवन पहले से काफी सरल एवं सहज हो गया है। उदाहरण के तौर पर नेट बैंकिंग, ई ऑफिस, सोशल साइट्स, वीडियो कॉल / कॉन्फ्रेंसिंग आदि। ऐसे में पूरी दुनिया ग्लोबल गाँव कही जाने लगी है जिसमें शिक्षा, व्यापार में वृद्धि हुई है। जाहिर है इसमें साइबर अपराध एक चुनौती बनकर उभरा है। तो आइए जानते हैं कि आखिर साइबर अपराध है क्या और इसे कैसे बचा जा सकता है?

साइबर स्पेस पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करके की गई अवैध गतिविधियों को साइबर क्राइम कह सकते हैं। साइबर क्राइम हमलों का टारगेट व्यक्ति, संगठन या सरकारें हो सकता है। यानी साइबर अपराधी किसी को भी अपना शिकार बना सकते हैं। साइबर अपराधी तकनीकी रूप से अत्यधिक कुशल होते हैं जिनका उद्देश्य किसी अन्य डिवाइस को नुकसान पहुंचाना और स्वार्थ सिद्ध करना होता है।

> “ मेरी प्राथमिकता साइबर अपराधों की रोकथाम खोज, जांच और अभियोजन के लिए एक प्रभावी ढांचा और इकोसिस्टम बनाना है।
>
> **अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री, भारत सरकार**

एक आंकड़े के मुताबिक कोरोना के समय भारत में साइबर अपराध 600 गुना ज्यादा बढ़ चुका है। भारत में प्रत्येक 6 व्यक्तियों में से एक व्यक्ति साइबर अपराध का शिकार होता है।

भारत में हरियाणा और झारखंड में ऐसें बहुत सारे लोग हैं जो साइबर क्राइम करते हैं। वे बहुत सारे तरीके अपनाते हैं। साइबर क्राइम करने की कोशिश में, जैसे कि फोन कॉल करके आपके बैंक अकाउंट संबंधित जानकारी लेना। एसएमएस द्वारा इनाम की खबर देकर आपसे पैसे लूटना। ई-मेल में नकली जानकारी देकर आपके निजी जानकारी हैक कर आपके मानसिक तनाव को बढ़ाना। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बड़ी हस्तियों के सामाजिक अकाउंट को भी हैक करते हैं।

पिछले दिनों ऐसा भी देखने में आया कि कोरोना के दौरान लोग सट्टेबाजी आदि में शामिल रहे जिसमें कुछ लोगों के आत्महत्या की खबरें आईं जो हृदय विदारक थीं। इस प्रकार आप देख रहे हैं कि आजकल साइबर अपराध इतना ज्यादा हो रहा है कि असली चीजें भी नकली लगती हैं। अत: इसमें कोई दो मत नहीं कि आज के समय में साइबर अपराध एक बड़ी चुनौती है।

साइबर क्राइम लगभग एक सा होता है। किसी भी शहर के साइबर क्राइम को देखें तो उसमें बहुत ज्यादा परिवर्तन देखने को नहीं मिलता। विशेषज्ञों की मानें तो आनेवाला समय साइबर अपराध का ही है। क्योंकि इससे कम समय में ज्यादा से ज्यादा दूसरे को हानि पहुंचाई जा सकती है और खूब धनराशि चुराई जा सकती है।

तो आइये जानते हैं साइबर अपराध से कैसे बचा जा सकता है:

- जागरूक बनें। सचेत रहें। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल https://cybercrime.gov.in/ से अद्यतन जानकारी प्राप्त करें। साइबर अपराध के शिकार होने पर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें।
- फेसबुक प्रोफाइल लॉक रखें। अपनी वर्तमान स्थान

जागरूक बनें। सचेत रहें। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल https://cybercrime.gov.in/ से अद्यतन जानकारी प्राप्त करें। साइबर अपराध के शिकार होने पर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें।

बदलते समय में खुद को बदलना होगा। अगर हम अपने देश के जागरूक नागरिक बनें तो यह डिजिटल युग आधुनिक समय में किसी वरदान से कम नहीं।

की अद्यतन फोटो साझा ना करें। इससे चोरों को पता चलता है कि आप घर पर नहीं हैं जिसका वह फायदा उठा सकते हैं।

- फ्री ऑफर के प्राप्त किसी भी अनजान लिंक को तुरंत हटाएँ।
- अनजान वीडियो को न खोलें और तुरंत हटाएँ।
- किसी ज्ञात और प्रामाणिक बैंक से ही ऋण लें।
- अपनी व्यक्तिगत सूचना जैसे कि एटीएम पिन, पासवर्ड किसी से साझा न करें।
- एटीएम कार्ड / क्रेडिट कार्ड के पीछे पासवर्ड न लिखें बल्कि याद कर रखें ।
- अपने मोबाइल फोन / लैपटॉप के ब्लूटूथ हमेशा बंद रखें व सोच समझकर ही किसी से साझा करें।
- कोई भी अंजान वीडियो डाउनलोड न करें।
- बिना जाने समझे किसी भी वीडियो / संदेश / लिंक/ चित्र को अग्रेषित (फॉरवर्ड) न करें।
- आपको अपनी व्यक्तिगत जानकारी सामाजिक मीडिया पर कभी नहीं देनी चहिए।
- आपको साइबर सुरक्षा के बारे में जानकारी होनी चाहिए ताकि आप साइबर अपराध से बच सकें।
- आपको कभी भी एसएमएस में लॉटरी पर विश्वास नहीं करना चाहिए।
- आपको कभी बैंक अकउंट के बारे में सुनकर घबराना नहीं है और सीधा उसे नजर अंदाज करना चाहिए।
- अपनी निजी जीवन की तस्वीरें सोशल साइट्स पर अपलोड करने से पूर्व यह जरूर विचारें कि क्या इन्हें सार्वजनिक करना ठीक है अथवा नहीं ?

कुल मिलाकर आधुनिकता और डिजिटल दुनिया से समाज में एक क्रांति आई है जो हर दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। इससे सभी कार्य अत्यंत ही सहज और सुलभ हो गए हैं जबकि गुणवत्ता में अभूतपूर्व परिवतन देखे जा सकते हैं। आज कोई भी सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना चुटकी में हो जाता है। इससे समय व धन की भी बहुत बचत होती है और हम कम से कम समय में अधिक से अधिक कार्य निष्पादित कर सकते हैं।

जाहिर है जब आधुनिकता ने हमारा कार्य इस हद तक सरल कर दिया है तो उसमें कुछ सावधानियाँ भी हैं जिसमें जागरूकता सबसे महत्वपूर्ण है। अगर कुशलता और छोटी छोटी बातों का विशेष तौर पर ध्यान रखें तो साइबर अपराध से न सिर्फ खुद को बचाया जा सकता है बल्कि दूसरों को भी सचेत किया जा सकता है।

> “मैं एक ऐसे डिजिटल इंडिया का सपना देखता हूँ जहाँ साइबर सुरक्षा हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का एक अभिन्न हिस्सा बन जाए।
>
> **नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत**

कुल मिलाकर बदलते समय में खुद को बदलना होगा। अगर हम अपने देश के जागरूक नागरिक बनें तो यह डिजिटल युग आधुनिक समय में किसी वरदान से कम नहीं।

मीनाक्षी राउत
सहायक (मा.सं.वि.) श्रेणी II
निगम कार्यालय
भुवनेश्वर

हिंदी पखवाड़ा - 2022

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेश का पालन करते हुए नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (नालको) के निगम कार्यालय सहित सभी एककों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में 14.09.2022 की तिथि को शामिल करते हुए हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा/माह मनाया गया।

यथा निर्देशित 14 सितंबर हिंदी दिवस पर आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत में प्रतिभागिता के साथ इस उत्सव का आरंभ किया गया। इस क्रम में कंपनी स्तर 14 सितंबर 2022 के दिन विशेष को शामिल करते हुए पालन किये गए हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा/माह का क्रम वार विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

निगम कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में शामिल होकर किया गया। इस दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उ) भुवनेश्वर के संयोजक कार्यालय के रूप में नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (नालको), निगम कार्यालय, भुवनेश्वर द्वारा सदस्य कार्यालयों के मध्य राजभाषा कार्यान्वयन को गतिशील एवं प्रेरक बनाए रखने के उद्देश्य से सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों की सहभागिता के साथ हिंदी सामान्य ज्ञान एवं चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधि शामिल हुए। विजेताओं को नराकास(उ) की दिनांक -30.09.2022 की बैठक में पुरस्कृत किया गया। नराकास (उ) की वर्ष 2022-23 की इस दूसरी छमाही बैठक में सदस्य कार्यालयों में राजभाषा को प्रोत्साहित करते हुए श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार भी प्रदान किया गया। जिसमें कार्यालय को शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र के साथ कार्यालय के हिंदी/प्रभारी अधिकारी को भी प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। नराकास(उ) के अध्यक्ष श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, नालको, उपाध्यक्ष श्री राधाश्याम महापात्र, निदेशक (मानव संसाधन) एवं क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह-मंत्रालय, भारत सरकार के प्रतिनिधि श्री निर्मल कुमार दूबे की उपस्थिति में विजेताओं एवं हिंदी/प्रभारी अधिकारी को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।

नालको के कर्मचारियों के मध्य राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग के संशय को दूर करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय हिंदी निबंध-लेखन प्रतियोगिता, पारिभाषिक शब्दावली एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता, पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान प्रतियोगिता के साथ विशेष शंकर दयाल सिंह स्मृति पुरस्कार का योजना का आयोजन किया गया। सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार तथा शील्ड के साथ अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एवं निदेशक (मा.सं.) द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया।

कर्मचारियों के बच्चों में प्रारम्भिक स्तर से ही हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने का प्रयास करते हुए बच्चों के बीच हिंदी कविता पाठ (दो वर्गों में) एवं कंपनी स्तरीय डीपीएस छात्रों के लिए अंतर विद्यालय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। विजेता छात्रों को नकद पुरस्कार एवं शील्ड के साथ अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय तथा निदेशक (मानव संसाधन) द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया। साथ ही समस्त प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी व माननीय खान मंत्री जी का हिन्दी संदेश पढ़ा गया।

खान एवं परिशोधन संकुल, दामनजोड़ी

खान एवं परिशोधन संकुल, नालको, दामनजोड़ी में हिंदी पखवाड़ा(14-28सितम्बर,2022) के अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्मिकों में हिंदी के प्रति उत्साह का संचार करने के उद्देश्य से आयोजित सृजनात्मक हिंदी प्रतियोगिताओं यथा हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कविता पाठ आदि का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के कार्मिकों ने बड़े जोश एवं उत्साह के साथ भाग लिया। आयोजित हिंदी पखवाड़ा-2022 का समापन दिनांक 29 सितम्बर, 2022 को मानव संसाधन विकास प्रशिक्षण केंद्र के सम्मेलन कक्ष में आयोजित पुरस्कार वितरण कार्यक्रम से सम्पन्न हुआ।

इन प्रतियोगिताओं में विजेताओं को श्री सुशील कुमार पाढ़ी, कार्यपालक निदेशक (खान एवं परिशोधन) के कर कमलों से वैजयंती और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री मणि प्रसाद सामल, प्रभारी समूह महाप्रबंधक(मानव संसाधन विकास एवं प्रशासन) सहित श्री

विनय ठाकुर, उप महाप्रबंधक(मानव संसाधन विकास) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से सभी विजेताओं का उत्साह वर्धन किया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री सुशील कुमार पाढ़ी ने अपने उदबोधन में संस्थान में राजभाषा की प्रगति की सराहना करते हुए हिंदी के महत्व को प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा कि ओड़िशा राज्य में हिंदी बड़ी सहजता से बोली एवं सहृदयता से स्वीकार की जाती है। श्री मणि प्रसाद सामल, प्रभारी समूह महाप्रबंधक (मानव संसाधन विकास एवं प्रशासन) ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित हिंदी कवि सम्मेलन एवं सफल हिंदी पखवाड़ा-2022 की भूरि- भूरि प्रशंसा करते हुए हिंदी के सभी विजेताओं को अपनी बधाई दी।

प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, अनुगुळ

नालको के प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2022 की अवधि में हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया । राजभाषा प्रचार-प्रसार के लिए इस दौरान कई कार्यक्रमों का आयोजन प्र. एवं वि. संकुल एवं सीआईएसएफ़ नालकोनगर के कर्मचारियों तथा संकुल में स्थित डीपीएस एवं एसवीएम स्कूलों के विद्यार्थियों हेतु किया गया। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन सम्पन्न हुआ।

पखवाड़े का शुभारंभ, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निदेश के अनुसार सूरत नगर में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में उपस्थिति से किया गया। इस सम्मेलन में इस संकुल का भी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। इस अवसर पर हिंदी से संबंधित सूक्तियों का प्रदर्शन किया गया। प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी से संबंधित सूक्तियों का प्रदर्शन स्थायी एवं अस्थाई तौर पर किया गया । इसके हेतु पोस्टर/बैनर/स्टैंडी/ बनाकर महापुरुषों की सूक्तियों का प्रदर्शन किया गया। कर्मचारियों एवं छात्रों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन आयोजन किया गया। जिसमें हिंदी भाषण प्रतियोगिता, चित्र-आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी देशभक्ति गीत-गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिनके विजेताओं को कार्यालय प्रमुख द्वारा पुरस्कृत करते हुए प्रोत्साहित किया गया।

पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 28.09.2022 को संकुल में आयोजित एक भव्य सांस्कृतिक संध्या में किया गया, जिसमें विजेताओं को पुरस्कृत करने हेतु कार्यपालक निदेशक (प्र. एवं वि.) एवं संकुल के सभी समूह महाप्रबंधक उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र में 01-14 सितम्बर 2022 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़े के दौरान निम्न 4 प्रतियोगिता का आयोजन किया गया-

1) हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता
2) हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता
3) हिंदी निबंध प्रतियोगिता
4) हिंदी प्रश्न प्रतियोगिता

इन प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। सभी की प्रतिभागिता से कार्यक्रम पूर्णत: सफल रहा। प्रतियोगिता का उद्देश्य कर्मचारियों को अपने कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करना था। ताकि, भारत सरकार की नीति के अनुसार कार्यालय में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित किया जा सके। नालको, दिल्ली कार्यालय द्वारा हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह, 14 सितम्बर 2022, को आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को आदरणीय समूह महाप्रबंधक (नि.का. व विपणन) द्वारा उनके प्राप्तांक के अनुसार पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वी क्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में हिंदी दिवस - 2022 के उत्सव में देश के साथ हाथ मिलाया। दैनिक गतिविधियों में राजभाषा को लागू करने की संस्कृति क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में आयोजित बैठक का मुख्य आदर्श वाक्य था। श्री सुदीप्त बसु, क्षेत्रीय प्रबंधक (पूर्वी क्षेत्र) द्वारा कार्यालय में सभी को राजभाषा के महत्व और पृष्ठभूमि के बारे में विस्तार से बताया गया। बैठक की मुख्य बातें नीचे दी गई हैं:

1. ठहर बच्चे के लिए शिक्षा का महत्वठ पर श्री के सी साहू, उप प्रबंधक (विपणन) द्वारा हिंदी कविता का पाठ।
2. व्यक्तिगत अनुभव और हिंदी में ग्राहकों के साथ बातचीत का प्रभाव श्री संदीप दरबारी, महाप्रबंधक (विपणन) द्वारा साझा किया गया।
3. श्री शंकर भट्टाचार्जी, (एडमिन) ने देश के विभिन्न हिस्सों

में अपने प्रवास के दौरान स्थानीय लोगों के साथ हिंदी में बातचीत करने का अपना अनुभव साझा किया।

4. श्री इशान कुमार, उप प्रबंधक ? (विपणन) ने देश में हिंदी दिवस समारोह के इतिहास और इसकी विशेषताओं पर एक संक्षिप्त परिचय दिया।
5. बैठक में आयोजित समसामयिक घटनाओं से संबंधित प्रश्नोत्तरी हिंदी में। सुश्री सोनिका प्रसाद, प्रबंधक (वित्त) विजेता के रूप में उभरीं।

इस स्वरूप में कार्यालय में राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करते हुए हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, दक्षिणी क्षेत्र

नालको दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में 14.09.2022 से 21.09.2022 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन) ने माननीय गृह मंत्री तथा मंत्रीमंडल सचिव महोदय के संदेश को पढ़ा। हिंदी सप्ताह के अवसर पर हिंदी अनुवाद, श्रुत लेखन, पर्यायवाची शब्द एवं हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने उत्साह पूर्वक प्रतिभागिता की। सभी विजेताओं को समापन कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी क्षेत्र

नालको मुम्बई कार्यालय द्वारा 01 सितंबर से 15 सितंबर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान अनुवाद, कविता पाठ, कहानी सत्र, अंत्याक्षरी, एवं विचार अभिव्यक्ति सत्र/कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सभी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ तक हिस्सा लिया। साथ ही निगम कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में भी कार्यालय द्वारा तीन नामांकन प्रेषित किये गए। जिसमें कि एक नामांकन को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके साथ ही निगम कार्यालय द्वारा आयोजित शंकर दयाल सिंह स्मृति पुरस्कार के लिए भी कार्यालय के प्रतिनिधि श्री राकेश रंजन को प्रशस्ति पत्र एवं निर्धारित पुरस्कार प्राप्त हुआ।

1.09.2022 को हिंदी पखवाडा-2022 समारोह का समापन श्री कुमार दीपक, उप महाप्रबंधक, विपणन, पश्चिमी क्षेत्र द्वारा राजभाषा हिंदी और आधिकारिक कार्यों में इसके उपयोग के महत्व के चर्चा के साथ किया गया।

पत्तन सुविधाएँ, विशाखपट्टणम

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग एवं नालको मुख्यालय द्वारा प्राप्त निदेशों के अनुसार विशाखपट्टणम स्थित नालको पत्तन सुविधा कार्यालय में राजभाषा हिंदी पखवाड़ा 2022 (14 सितंबर से 29 सितंबर) सफलतापूर्वक मनाया गया । पखवाड़ा के आरंभ से पहले परिपत्र के माध्यम से पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की सूचना प्रेषित की गई ।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के प्रवेश-द्वार पर राजभाषा पखवाड़ा 2022 से संबंधित बैनर लगाया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14.09.2022 को सभी ने राजभाषा प्रतिज्ञा ली। हिंदी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 14.09.2022 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता, दिनांक 23.09.2022 को डिजिटल माध्यम से प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, दिनांक 24.09.2022 को वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा 26.09.2022 को श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से सक्रियता से भाग लिए।

हिंदी पखवाड़ा 2022 का पुरस्कार-वितरण सह समापन समारोह, दिनांक 29.09.2022 को कार्यालय के सम्मेलन-कक्ष में श्री पी.आर.स्वाइन, समूह महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । समारोह में मुख्य-अतिथि के रूप में श्री जय प्रकाश झा, अनुवाद अधिकारी, ईएसआईसी विशाखपट्टणम उपस्थित रहे । अपने संबोधन में श्री पी.आर. स्वैन, समूह महाप्रबंधक ने राजभाषा पखवाड़ा की शुभकामनाएं देते हुए सभी से अधिकाधिक हिंदी में कार्य करने की अपील किए । अपने संबोधन में श्री जय प्रकाश झा, अनुवाद अधिकारी ने सभी को हिंदी को कार्यालयीन जीवन-शैली में अंगीकार करने की अपील किए और राजभाषा के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला । समापन समारोह में हिंदी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया । कार्यक्रम का संचालन श्री देवाशीष मिश्रा तथा संयोजन श्री सूरज थापा , सहायक प्रबंधक (मा.सं.वि. और प्रशासन) द्वारा किया गया । इस समारोह में श्री ए.वी.सुब्बा राव, महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्री उपेन्द्र मिश्रा, महाप्रबंधक (विपणन एवं प्रशासन), श्री संजीव कुमार जैन, उप महाप्रबंधक (विद्युत एवं इंस्ट्रूमेंटेशन) सहित सभी अधिकारी / कर्मचारी उपस्थित रहे ।

कार्यक्रम की झलकियाँ

पुरस्कार वितरण समारोह में अ.स.प्र.नि. महोदय का संबोधन

निगम कार्यालय प्रतियोगिता में प्रतिभागी वरिष्ठतम अधिकारी

नराकास (उ), अध्यक्ष कार्यालय के रूप में सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित प्रतियोगात में प्रतिभागी

नराकास (उ) स्तर पर वर्ष - 2021-22 के लिए प्रदान किया गया श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार

दामनजोड़ी एकक में पुरस्कार वितरण के अवसर पर विजेताओं के साथ वरिष्ठ अधिकारी

दामनजोड़ी में हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में कवियों के साथ वरिष्ठ अधिकारी

अनुगुळ कार्यालय में समापन समारोह में विजेता छात्रा को पुरस्कृत करते हुए कार्यालय प्रमुख के साथ अन्य अधिकारीगण

अनुगुळ कार्यालय में समापन समारोह के दौरान लोक नृत्य प्रस्तुत करती हुईं कलाकार

उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली में पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत करते हुए वरिष्ठ अधिकारी

चेन्नै क्षेत्रीय क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी सप्ताह समारोह

मुंबई क्षेत्रीय क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी सप्ताह समारोह

विशाखपट्टणम, पत्तन सुविधाएं कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा आयोजन का दृष्य

वाष्प टर्बाइन :एक परिचय

तापीय विद्युत संयंत्र में बिजली उत्पादन के लिए जेनेरेटर साफ्ट को घुमाने के लिए टर्बाइन से वाष्प को गुजारा जाता है जहाँ उष्मा ऊर्जा का यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तन होता है। वास्तव में टर्बाइन एक घूर्णन यंत्र है, जिसमें वाष्प का उच्च दाब से निम्न दाब की तरफ विस्तार होता है जिससे कार्य की उत्पत्ति होती है ।

पानी की तापीय क्षमता और उसका उष्मा का बेहतर वाहक होना, तापीय विद्युत संयंत्र में उसे कार्यात्मक द्रव्य के लिए काफी अनुकूल बनाता है । पानी को बायलर में गर्म कर भाप में परिवर्तित किया जाता है । बायलर से भाप उष्मा को प्राप्त कर टर्बाइन के लिए जाता है ।

भाप के दाब, प्रवाह एवं उसके गमन के आधार पर टर्बाइन के कई प्रकार होते हैं ।

दाब के आधार पर टर्बाइन का वर्गीकरण

1 उच्च दाब टर्बाइन

2 मध्यम दाब टर्बाइन

3 निम्न दाब टर्बाइन

किसी भी तापीय विद्युत संयंत्र में भाप का संचार पहले उच्च दाब टर्बाइन में फिर मध्यम दाब टर्बाइन और अंत में निम्न दाब टर्बाइन में होता है। निम्न दाब टर्बाइन से भाप का निकासी कंडेनसर को होता है, जहाँ भाप को फिर से ठण्डा करके पानी में परिवर्तित किया जाता है।

पुनस्तपित टर्बाइन (रीहिट टर्बाइन)

इस प्रकार के टर्बाइन में भाप को उच्चतम दाब टर्बाइन से निकासी के बाद फिर से बायलर में गर्म कर के उच्च ताप प्राप्त करने के लिए भेजा जाता है इस प्रक्रिया को रीहिट कहते हैं । रीहिट के बाद भाप को मध्य दाब टर्बाइन में दाखिल किया जाता है।

पुनर्जनन टर्बाइन (रीजेनेरेटीव टर्बाइन)

इस प्रकार के टर्बाइन में भाप की पतली संकर्षण (एक्स्ट्रैक्शन) पाइप होती है। जिससे भाप की छोटी मात्रा का निकासी कर विभिन्न उष्मा विनिमयक में डाला जाता है। उष्मा विनियामक में कण्डनसेर/ पानी को शुरुआती उष्मा ऊर्जा प्रदान किया जाता है ।

भाप के प्रवाह के आधार पर

1. एकल प्रवाह

2 द्वि प्रवाह

3 त्रि प्रवाह

भाप के टर्बाइन में प्रवेश के बाद निकासी के लिए एक या उससे ज्यादा दिशा में विस्तार होता है। ऐसा टर्बाइन पर लगने वाले प्रतिक्रिया बल को शून्य करने के लिए किया जाता है ।

संरचना के आधार पर

1 एकल स्टेज टर्बाइन

2 अनेक स्टेज टर्बाइन

एकल स्टेज टर्बाइन में एक वृताकार पंक्ति स्थिर पत्तियों (ब्लेड) का एवं एक वृताकार पंक्ति चालित पत्तियों का होता है। वहीं बहु या अनेक स्टेज टर्बाइन में स्थिर और चालित पत्तियों के कई पंक्तियाँ होती है । स्थिर पत्तियाँ स्टेटर से लगी होती हैं वहीं चालित पत्तियाँ रोटर से लगी होती है ।

आवरण के आधार (सिलेंडर) पर

1 एकल सिलेंडर

2 दो सिलेंडर

3 तीन सिलेंडर

रोटर के ऊपर कितने केसिंग है ,अगर तीन रोटर के लिए तीन केसिंग हैं तो उसको तीन सिलेंडर टर्बाइन कहते हैं।

भाप और ब्लेड के बीच होने वालीं परस्पर क्रिया के सिद्धांतो के आधार पर

1 आवेग (एंपल्स) टर्बाइन

3 आवेग प्रतिक्रिया (एंपल्स रिएक्सन) टर्बाइन

एंपल्स टर्बाइन में वाष्प दाब घटोत्तरी सिर्फ चालित पत्तियों पर होती है लेकिन एंपल्स रिएक्सन टर्बाइन में वाष्प दाब घटोत्तरी दोनों स्थिर एवं चालित पत्तियों पर होती है ।

नालको के ग्रहीत विद्युत संयंत्र में तापीय विद्युत संयंत्र के दस इकाई (यूनिट) हैं। यूनिट एक से छह तक एक तरह का

टर्बाइन है वहीं सात से दस तक दूसरे तरह का है ।

यूनिट 1 से 6 तक के टर्बाइन
तीन सिलेंडर, रिहिट, कंडेनसिंग टर्बाइन
उच्च दाब टर्बाइन
बैरेल टाइप, एकल प्रवाह, 30 प्रतिक्रिया स्टेज ।
माध्यम दाब टर्बाइन
क्षैतिज विभाजन, द्वि प्रवाह, 20 प्रतिक्रिया स्टेज।
निम्न दाब टर्बाइन
क्षैतिज विभाजन, द्वि प्रवाह,10 प्रतिक्रिया स्टेज।

यूनिट 7 से 10 के टर्बाइन

दो सिलिंडर रिहिट कंडेनसिंग टर्बाइन
उच्च दाब टर्बाइन
क्षैतिज विभाजन, एकल प्रवाह, 22 प्रतिक्रिया स्टेज(#7&8) 23 प्रतिक्रिया स्टेज(#9&10)।
मध्यम दाब टर्बाइन
क्षैतिज विभाजन,एकल प्रवाह, 20 प्रतिक्रिया स्टेज।
निम्न दाब टर्बाइन
क्षैतिज विभाजन, एकल प्रवाह, 20 प्रतिक्रिया स्टेज।

टर्बाइन तापीय विद्युत संयंत्र का अहम हिस्सा होता है। टर्बाइन की संरचना, संयंत्र की उपयोगिता के हिसाब से ही किया जाता है । यद्यपि संयंत्र में काम करने वाले सभी कर्मचारियों को इसके अवलोकन या इससे पेशेवर रूप से जुड़ने का अवसर नहीं होता, फिर भी सब को टर्बाइन का एक परिचयात्मक जानकारी होनी ही चाहिए।

अखिल कुमार
उप प्रबंधक (यांत्रिक)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
अनुगुळ

गाँव

एक मैली चादर सा
गाँव को छोड़
जब मैं शहर आया था
तब,
अपने गाँव और इस शहर में
बहुत बड़ा अंतर पाया था
तब,
मेुझ अपना गाँव/किसी शब्द-सा
शब्दकोष में सिमटा लगता था
और शहर का अक्श
अपने आईने में/ काफी बड़ा दिखता था
पर अब,
अपने आईने में उभरता अक्श ही
भयावह लगता है
बदशक्ल सा उभरता हर चेहरा
अपना ही दिखता है
में बैचैन हो उठता हूँ
शब्द की तलाश में / शब्दकोष पलटता हूँ
शायद वह शब्द पा सकूँ
शब्द क्या है.... मेरा गाँव.... प्यारा बटुए सा गाँव
जिसमें चन्द सिक्के मैने/ अपनी यादों के संजोए हैं
जब कभी भी ये सिक्के खनखनाते हैं
मैं अतीत से जुड़ जाता हूँ
उस समय खुद को / शहर में नहीं
गाँव की मिट्टी में पाता हूँ।

डॉ. अशोक कुमार जोशी
हिन्दी प्राध्यापक
डीपीएस, दामनजोड़ी

जनसंपर्क: उत्तरदायित्व और भूमिका

प्रत्येक विचार, तथ्य या धारणा के प्रसार एवं फैलाव के लिए उसका अभिव्यक्त होना आवश्यक है। इस संदर्भ में निगमित संप्रेषण संगठन के आंतरिक एवं वाह्य गतिविधियों के प्रबंधन एवं उनके सम्मिलित स्वरूप का स्पष्टीकरण है। जिससे कि संगठन की छवि को संवारने-सुधारने की पहल की जाती है। जिसका की संगठन के हितधारकों के साथ ही साथ समाज एवं देश पर भी व्यापक असर होता है, दोनों ही एक दूसरे से प्रेरित भी होते हैं और प्रभावित भी। निगमित संप्रेषण का पहला उद्देश्य अपने दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने के साथ ही साथ स्थापित करना भी होता है। इसलिए जनसंपर्क किसी भी संगठन का अतिमहत्वपूर्ण पहलू है। प्रत्येक जनसंपर्क कार्यक्रम तथा संप्रेषण का एक विशिष्ट उद्देश्य, नीति एवं योजना होती है। जो कि संगठन की छवि को निर्मित करने के साथ ही साथ कर्मचारियों एवं हितधारकों की भावनाओं को भी प्रभावित करती है।

जनसंपर्क कला एवं विज्ञान का समन्वय है। जनसंपर्क को कई रूपों में परिभाषित किया गया है, बतौर ''किसी संगठन और उसके लोगों के बीच आपसी समझ स्थापित करने और उसे बनाए रखने के लिए विवेकशील, सुनियोजित और दीर्घकालिक प्रयास करना'' या फिर यह कि, ''किसी गतिविधि, कारण, आंदोलन, संस्थान, उत्पाद या सेवा प्राप्त करने के लिए जानकारी, अनुनय, समायोजन और संपर्कों द्वारा प्रयास जनसंपर्क कहलाता है।'' किसी भी पद, प्रतिष्ठा या पेशे में आचार संहिता एक आवश्यक तत्व है। जनसंपर्क भी इसका अपवाद नहीं है। अपनी संपूर्णता के साथ निगमित संप्रेषण का आवश्यक कार्य है-

- सकारात्मक एवं अनुकूल परिवेश का निर्माण।
- प्रभावी एवं कार्यकुशल संप्रेषण सुनिश्चित करना।
- निगमित संस्कृति, निगमित पहचान और निगमित दृष्टि को स्पष्ट व मजबूत करना।
- निगमित नागरिकता की वास्तविक समझ स्थापित करना।

इस आवश्यक कार्य की आधारभूत संरचना अर्थात पेज द्वारा चिह्नित सात सिद्धांतों पर आधारित मानी जा सकती है-

1. सच बताइए - जनता को जानने दीजिए कि क्या हो रहा है और कंपनी के विचार एवं प्रथाओं की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत कीजिए।
2. काम द्वारा उदाहरण - संगठन के प्रति धारणा का निर्माण 90 प्रतिशत उसके किए गए कार्य से बनता है और 10 प्रतिशत उसके कही हुई बात से।
3. सुनिए - कंपनी को अच्छी सेवा देने के लिए यह समझना जरूरी है कि संबंधित लोगों की चाहत व जरूरत क्या है? कंपनी के उत्पाद, नीति और कार्यकलाप के बारे में सुनिए और कंपनी के वरिष्ठ अधिकारों, नीति निर्माताओं को इस बारे में सूचित करते रहिए।
4. भविष्य का पूर्वानुमान - कंपनी के सफल संचालन के लिए अति आवश्यक है कि, हम पूर्वानुमान के साथ भविष्य को समझने एवं रणनीति बनाने का प्रयास करते रहें।
5. जनसंपर्क को कपनी का चेहरा बनाना - निगमित संबंध एवं प्रबंधन कार्य है। कंपनी के कार्यों की प्रस्तुति के साथ ही साथ नियामक निकायों के साथ संप्रेषण में कंपनी की छवि का खयाल रखा जाना अति आवश्यक है।
6. कर्मचारियों से ही कंपनी प्रदर्शित होती है - एक कंपनी अपने कर्मचारियों के साथ ही पलती एवं बढ़ती है। कर्मचारियों के व्यवहार, समझ और कार्यप्रणाली से ही कंपनी की छवि का निर्धारण होता है। अत: जनसंपर्क का दायित्व है कि, प्रत्येक कर्मचारी की क्षमता को बढ़ाए और प्रत्येक हितधारक के प्रति ईमानदारी से जानकारी को संप्रेषित करे।
7. शांत, धैर्यवान और प्रसन्नचित्त - जानकारी और जनसंपर्क के दृढ़ और तार्किक ध्यान के साथ अच्छे जनसंपर्क के लिए आधार तैयार कीजिए। शांत, धैर्यवान और प्रसन्नचित्त रहकर अपने कार्य दायित्व को पूरा करने का प्रयास कीजिए।

उक्त आधारभूत संरचना के साथ जनसंपर्क के लिए मुख्य कार्य जानकारी एवं सूचना का संप्रेषण होता है। इस कार्य के लिए बहुत जरूरी है कि हिंदी के 'स' अक्षर से शुरू होने वाले इस सात शब्दों का संप्रेषण में विशेष ख्याल रखा जाए-

- ✓ संक्षिप्त- संदेश संक्षिप्त और पाठकों का ध्यान आकर्षित करने वाला होना जरूरी है।
- ✓ सशक्त- संदेश ठोस होना चाहिए, जिसमें कही जानी वाली सब बातों का अर्थ हो, परंतु छोटा हो।
- ✓ स्पष्टता- संदेश सदैव उपयुक्त और सुस्पष्ट अर्थ देने वाला होना चाहिए।
- ✓ संपूर्ण- संदेश पाठक को पर्याप्त जानकारी देने वाला होना चाहिए।
- ✓ सुशीलता- संदेश में पाठकों को उचित सम्मान होना आवश्यक है। भाषा शिष्ट होनी चाहिए।
- ✓ सत्यता- संदेश के सही होने की जाँच की जानी चाहिए और भाषा में भी कोई गलती नहीं होनी चाहिए।
- ✓ सोच-विचार- संदेश को पूरे सोच विचार के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

जनसंपर्क एक अतिमहत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी एवं जवाबदेही का कार्य है। इस कार्य विशेष के लिए अपेक्षित ज्ञान एवं कौशल आवश्यक है। कारण यह कि कौशल आपको एक बेहतर और प्रभावी संप्रेषक बनने में सक्षम बनाते हैं। इससे आपको संदेश-सृजन करने में सहूलियत तो होती ही है साथ ही सफलतापूर्वक संप्रेषण करने में भी यह सहयोगी होता है। इसके लिए मूलत: श्रवण, अंतर्वैयक्तिक, बातचीत, संपर्क स्थापन, सफल और प्रभावशाली कौशल की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में यह भी जानना जरूरी है कि श्रवण कौशल स्वयं सीखे जाते हैं, अंतर्वैयक्तिक कौशल-बातचीत कौशल-संपर्क स्थापना कौशल, सफल और प्रभावशाली लोगों का अवलोकन करके सीख सकते हैं। प्रस्तुतिकरण कौशल की बात करें तो, इसमें तकनीकी योग्यता भी शामिल की जा सकती है। इसके लिए औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता कही एवं समझी जा सकती है। इसी प्रकार उच्चारण, सार्वजनिक भाषण, टेलीफ़ोन शिष्टाचार, मौलिक लेखन, निर्णय लेना और तनाव प्रबंधन से संबंधित औपचारिक प्रशिक्षण भी कभी-कभी आवश्यक एवं प्रभावी होते हैं। इन सबके साथ जनसंपर्क का एक प्रमुख मुद्दा समय प्रबंधन भी है, जो कि आपके जिम्मेदारी के साथ ही साथ आपके व्यक्तिगत विलक्षणता पर निर्भर करता है। लेकिन इसे अनुभव से भी विकसित किया जा सकता है।

इन सबके बीच जनसंपर्क के लिए अत्यंत उपयोगी धारणा यह भी है कि जन संपर्क में संपर्क जन अर्थात मानव के साथ किया जाता है। जो मानव का मानव के लिए और मानव द्वारा की गई गतिविधि का व्यापक हिस्सा है। इसलिए यह भी मायने रखता है कि संप्रेषण मानव से जुड़ा हो। इसलिए श्रोताओं की आवश्यकता एवं रूचि का विश्लेषण और उनका चयन करना भी महत्वपूर्ण होता है। साथ ही पूरी प्रक्रिया में तालमेल स्थापित करना भी आवश्यक है। तालमेल का सीधा संबंध विश्वास और सामंजस्य स्थापित करना होता है। जिनसे अपनी बात कही जा रही है उनका समर्थन प्राप्त करना एक कला है। इस स्थान पर यह भी जान लेना जरूरी है कि संप्रेषण का 93 प्रतिशत हमारे हाव-भाव और बात करने के ढ़ंग से अभिव्यक्त होता है जबकि मात्र 7 प्रतिशत हमारे बात करने के दौरान कहे गए शब्दों से। संप्रेषण में चेतन और अचेतन दोनों स्तरों पर कार्य करने की योग्यता विकसित करके ही हम सीख सकते हैं कि कम समय में भी किसी के साथ गहन संपर्क, विश्वास और सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता से भी हमारा संप्रेषण का असर उपजता है। अपने आप में निर्णय लेना एक जटिल प्रक्रिया हो सकती है। कारण यह कि निर्णय लेने में मानवीय और स्थूल दोनों ही बातों की बराबर की भूमिका होती है। किसी भी स्थिति में परिणाम का पूर्वानुमान लगाकर स्थिति से जुड़े सभी बातों के हर पहलु पर ध्यान रखते हुए इससे जुड़े हर व्यक्ति और संस्था के हित का ख्याल रखते हुए कोई निर्णय लेना हमेशा ही प्रभाव उत्पन्न करता है। ऐसा करते हुए लिए गए निर्णय की गंभीरता को समझते हुए कपनी की ओर से संपर्क साधना एक बेहद जटिल कार्य है। इसलिए इन बातों पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जाना भी उतना ही जरूरी है। इस क्रम में जनसंपर्क के कार्य में सदैव संदेश को परिस्थिति के अनुरूप तैयार करने के अलावा तैयार किये गए संदेश को उपयुक्त माध्यम से अभिव्यक्त करना तथा लक्षित समूह की विशेषताओं को ध्यान में रखना होता है। संप्रेषण की भाषा लक्षित समूह पर निर्भर करती है। जनसंपर्क से जुड़े व्यक्ति को अपनी मनोवृत्ति और कौशल को भी परिस्थिति एवं अवस्था के अनुकूल अभिव्यक्त करना आना चाहिए।

जनसंपर्क के अंतर्गत कार्यक्षेत्र की यदि बात करें तो यह समझ लेना होगा कि जनसंपर्क वास्तव में कंपनी की जबान

बनकर लोगों से संपर्क करने का कार्य करती है। जिसे केवल कहने का ही नहीं बल्कि संवेदना और भावनाओं के अनुरूप सुनने एवं समझने के साथ ही साथ उस अनुभव को सभी संबंधितों के लाभ के लिए वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुँचाने की भी आवश्यकता होती है। जनसंपर्क का कार्यक्षेत्र वैसे तो बहुत ही व्यापक है, फिर भी इसे निगमित कार्यालयों और अन्य संगठनों में नियोक्ताओं और कर्मचारियों के मध्य होने वाले सभी संप्रेषण कार्य, साझेदारों, संचार माध्यमों, गैर-सरकारी संगठनों, सरकार, ग्राहकों और जनसाधारण से संप्रेषण करने के लिए, बाहरी एजेंसियों के साथ काम करने में निर्णायक भूमिका निभाने में सक्रिय भूमिका पूरी करनी होती है।

सीधे शब्दों में कहा और समझा जाए तो किसी भी संगठन का प्रत्येक कर्मचारी अपने संगठन के लिए जनसंप्रेषण करता है। अपने रोज-मर्रा की जिंदगी में किसी से भी मिलते, बात करते हुए वह अपने कार्य परिवेश और परिस्थिति के साथ ही साथ जाने-अनजाने पूरे संगठन की एक छवि प्रस्तुत करता है। वह अपने आप में कंपनी-संगठन के प्रतिनिधि के रूप में पूरे कंपनी-संगठन का परिचय प्रस्तुत कर देता है। इसलिए जरूरी है कि संगठन का प्रत्येक कर्मचारी संगठन में अपने महत्व को समझते हुए संगठन के सम्मान में अपना और अपने संगठन का परिचय प्रस्तुत करे। इसी से कंपनी मजबूत और प्रगतिशील बनी रह सकती है।

आशुतोष रथ
महाप्रबंधक (प्रशासन एवं निगम संचार)
भुवनेश्वर

तुम जाओगे पर थोड़ा-सा रह जाओगे

तुम जाओगे पर थोड़ा-सा
रह जाओगे मेरे अंतर्मन में
आशीर्वाद बनकर
हौसला बनकर
यह विचार बनकर
कि जो सोचा है अच्छा है
तो बस कर लो सोचोगे तो ठहर जाओगे
पता नहीं यह पल कल होगा कि नहीं
तुम जाओगे पर थोड़ा-सा रह जाओगे।
तुम तो इंजीनियर थे
कल पुर्ज़ों को जोड़ना
तुम्हारा हुनर भी और पेशा भी
पर सोशल इंजीनियरिंग भी क्या खूब की
इंजीनियरिंग से
सोशल इंजीनियरिंग का अनूठा रूप
जिसमें सब एक रंग में मिले
ऐसा नेतृत्व
जिसकी छाँव में सब बढ़े
बढ़ी हमारी कम्पनी
तुम जाओगे पर थोड़ा-सा रह जाओगे
अपने ज्ञान से
जिसमें कल पुर्ज़ों को
जोड़ने की कला है तो
मानव संसाधन की
अद्भुत समझ भी
खान की खनक से
हिंदी के संस्कार की बीज बोते
तुम जाओगे पर थोड़ा-सा रह जाओगे
हर एक नयी पहल में
मानवता में ज़िंदगी को हर पल
रचनात्मक बनाने में तुम जाओगे
पर थोड़ा रह जाओगे
शांति में
सुकून में
विश्वास में
संतोष में
खुद को समर्पण कर अध्यात्म में
ऐसे जीवन का संदेश देकर
तुम जाओगे पर थोड़ा यहीं रह जाओगे।
हमारे बीच हमारे दिल में।

रामकृष्ण चौधुरी
सहायक (मानव संसाधन विकास)
एल्यूमिना परिशोधक, दामनजोड़ी

बहुभाषिकता में एकता

जिस देश को अपनी भाषा, साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता। भारत की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ विभिन्नता में एकता है। भारत में विभिन्नता का स्वरूप न केवल भौगोलिक है बल्कि भाषायी एवं सांस्कृतिक भी है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ 1.2 अरब से अधिक लोग मातृभाषा के रूप में 1969 विभिन्न भाषाएँ या बोलियाँ बोलते हैं। जबकि संविधान द्वारा 22 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता प्रदान की गई है। भारत में बोली जाने वाली भाषाएँ कई भाषा परिवारों से संबंधित हैं। जिनमें प्रमुख हैं 78.05% भारतीयों द्वारा बोली जाने वाले इंडो – आर्यन भाषाएँ और 19.64% द्वारा बोली जाने वाली द्रविड़ भाषाएँ। शेष 2.31% आबादी ऑस्ट्रो एशियाटिक, चीन, तिब्बती, ताई-कडाई और अन्य छोटे भाषा परिवारों से संबंधित है। भारत में चार भाषा में से एक भाषा परिवार दक्षिण एशिया, उल्लेखनीय संपर्क के रूप में फारसी और अंगेजी के प्रभाव भाषाएँ हैं। भाषाई अभिलेख लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से बाह्मी लिपि की उपस्थिति के साथ शुरू होते हैं। सिंधु धाटी सभ्यता की सबसे पुरानी लिपिबद्ध लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। ईस्ट इंडिया कंपनी के एक पुरातत्वविद जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि को समझ लिया और इस प्रकार, भारत के इतिहास के बारे में ज्ञान का एक भंडार खोल दिया। उत्तर भारत में बोली जाने वाली भारतीय भाषा परिवार की भाषाओं को आर्य भाषा समूह, दक्षिण की भाषाओं को द्रविड़ भाषा समूह के रूप में मूलत: जाना जाता है। परंतु सरकारी कामकाज में व्यवहार में लाई जानी वाली दो भाषाएँ हैं, हिंदी और अंग्रेजी। हिंदी भारत के उत्तरी हिस्सों में सबसे व्यापक रूप में बोली जाने वाली भाषा है। 19 वीं शताब्दी के अंत में ही हिंदी को भाषा के रूप में जाना जाने लगा। कई बोलियाँ और भाषाएँ, हैं, जिनमें से कुछ का अपना व्याकरण और वाक्य-विन्यास है, जिन्हें हिंदी शब्द के तहत समूहीकृत किया गया है। जिनमें हरियाणवी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, बघेली, कन्नौजी और राजस्थानी शामिल है। कोंकणी को लंबे समय तक मराठी की बोली माना जाता रहा । लेकिन जब गोवा भारत का हिस्सा बन गया और कोंकणी को इसकी राज्य भाषा के रूप में चुना गया, तो धारणा पूरी तरह बदल गई। स्कूलों में पालन किए जाने वाले तीन – भाषा के फार्मूले के हिस्से के रूप में बेहतर भाषाई एकीकरण में सहायता के लिए भाषाओं के इंडी- आर्यन परिवार से कम से कम एक भाषा और द्रविड़ परिवार से एक भाषा हो सकती है। अगर सही तरीके से पढ़ाया और सिखाया जाए तो किसी एक इंडी आर्यन भाषा जैसे बंगाली, गुजराती, मराठी और हिंदी का ज्ञान अन्य समान भाषाओं के व्यवहार में सहायता कर सकता है। यही बात द्रविड़ भाषाओं – तमिल, तेलुगु, मलायलम और कन्नड़ पर भी लागू होती है। एक भाषा जानें और दूसरों के सीखने के लिए दरवाजे खुलेंगे, बशर्ते समर्थन मौजूद हो तो। सरकार अपने गृह मंत्रालय के तहत राजभाषा विभाग के माध्यम से हमारी आधी से भी कम आबादी द्वारा बोली जाने वाली भाषा के लिए भारी राशि आवंटित करती है। उन निधियों का एक हिस्सा, यदि अन्य भाषाओं को समर्पित संस्थानों को आवंटित कर दिया जाए, तो राष्ट्रीयता की एक बड़ी भावना को बढ़ावा मिलेगा। भारतीयों ने भारतीय भाषा को मूल मंत्र मानकर उसे सम्मान दिया। भाषाओं हमें मजबूत बनाती हैं। भाषाऐं हमें लड़ने के लिए शक्ति दिए, भाषाएँ हमें आज़ादी के लिए लड़ना सिखाया है। हमारी भाषा हमारी पहचान है। यह भाषाओं में रचित काव्य, संगीत, नाटक आदि हमें प्रेरणा दिए हैं यह हमें लड़ना सिखाते हैं। भाषाएँ हमें सिर उठाकर जीना सिखाते हैं। हमारी भाषा हमारी ताकत है। भारतीय समाज को सांस्कृतिक आदान – प्रदान के लिए अधिक उपजाऊ स्थल बनने के लिए उपभोक्ताओं को इसकी माँग दिखानी होगी। इसके बलबूते पर हम आज़ादी की लड़ाई लड़े और वह हासिल किए हैं। हमारी भाषा हमारी परिचय दर्शाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कदचित राजभाषा के पद पर समासीन करने के लिए ही लिखा था:

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

ऐशानी दत्ता
कक्षा - 10
डीपीएस, दामनजोड़ी

श्री विवेक भारद्वाज, सचिव, खान मंत्रालय के कर कमलो से नए उत्पाद विमोचन कार्यक्रम के अवसर पर श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको, डॉ. वीणा कुमारी डी, संयुक्त सचिव, खान मंत्रालय, भारत सरकार, नालको के निदेशकगण एवं उपस्थित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

मैट्रिक परीक्षा में अनुगुळ के परिधीय गाँवों के विद्यार्थियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर निगम कार्यालय, नालको में योगाभ्यास करते हुए श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा एवं अन्य कर्मचारीगण

नालको NALCO

एक नवरत्न केंद्रीय लोक उद्यम

भारतीय सार
वैश्विक प्रसार

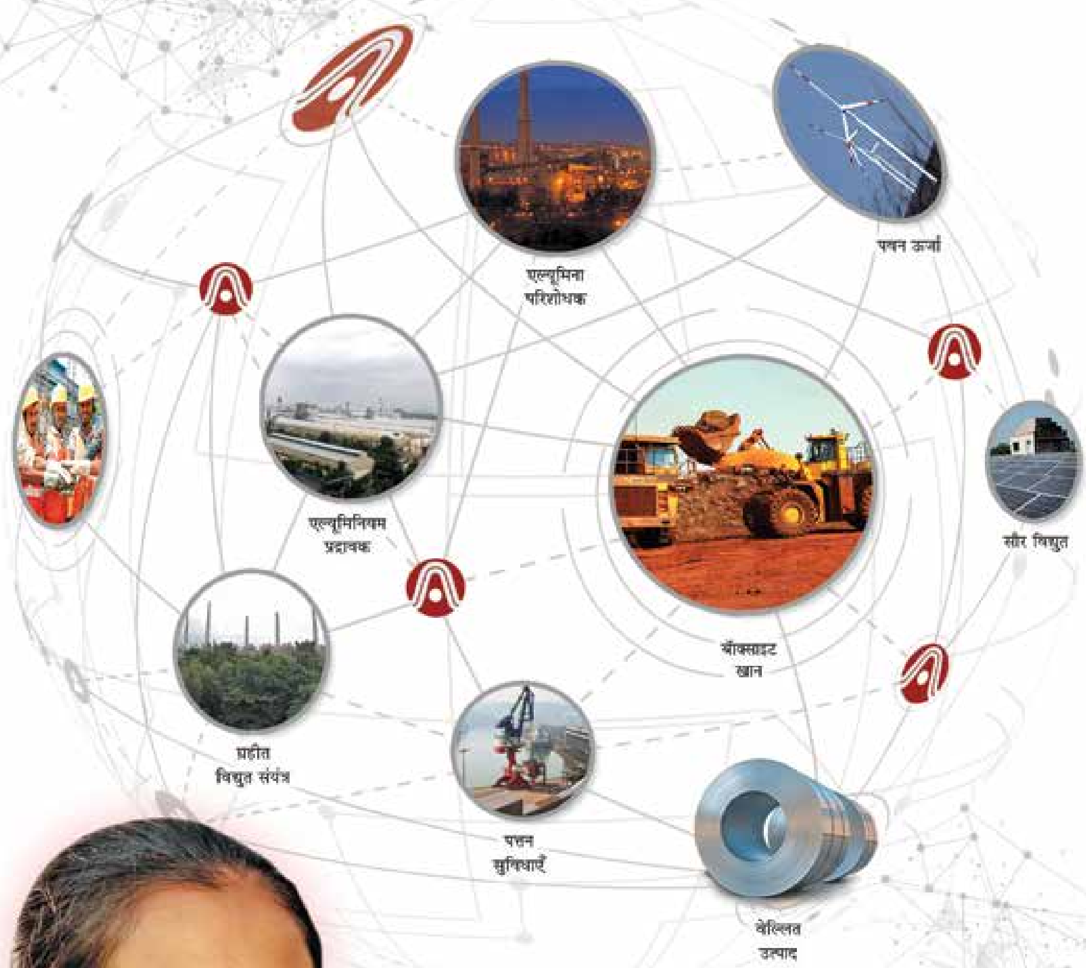

एशिया में वृहत्तम एकीकृत एल्यूमिना और एल्यूमिनियम संकुलों में से एक, नालको के प्रचालन बॉक्साइट खनन, एल्यूमिना परिशोधन, एल्यूमिनियम प्रद्रावण, विद्युत सृजन से लेकर अनुप्रवाह उत्पादों तक की समग्र मूल्य शृंखला को पार कर के आगे बढ़ रहे हैं ।

- ▲ विश्व में एल्यूमिना का निम्नतम लागत का उत्पादक
- ▲ विश्व में बॉक्साइट का निम्नतम लागत का उत्पादक
- ▲ दूसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम

नालको वेबसाईट | नालको ट्विटर | @NALCO_India | @CMDNalco | fb.com/nalcoindia | www.nalcoindia.com